CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH 1

|| the gurukul ||

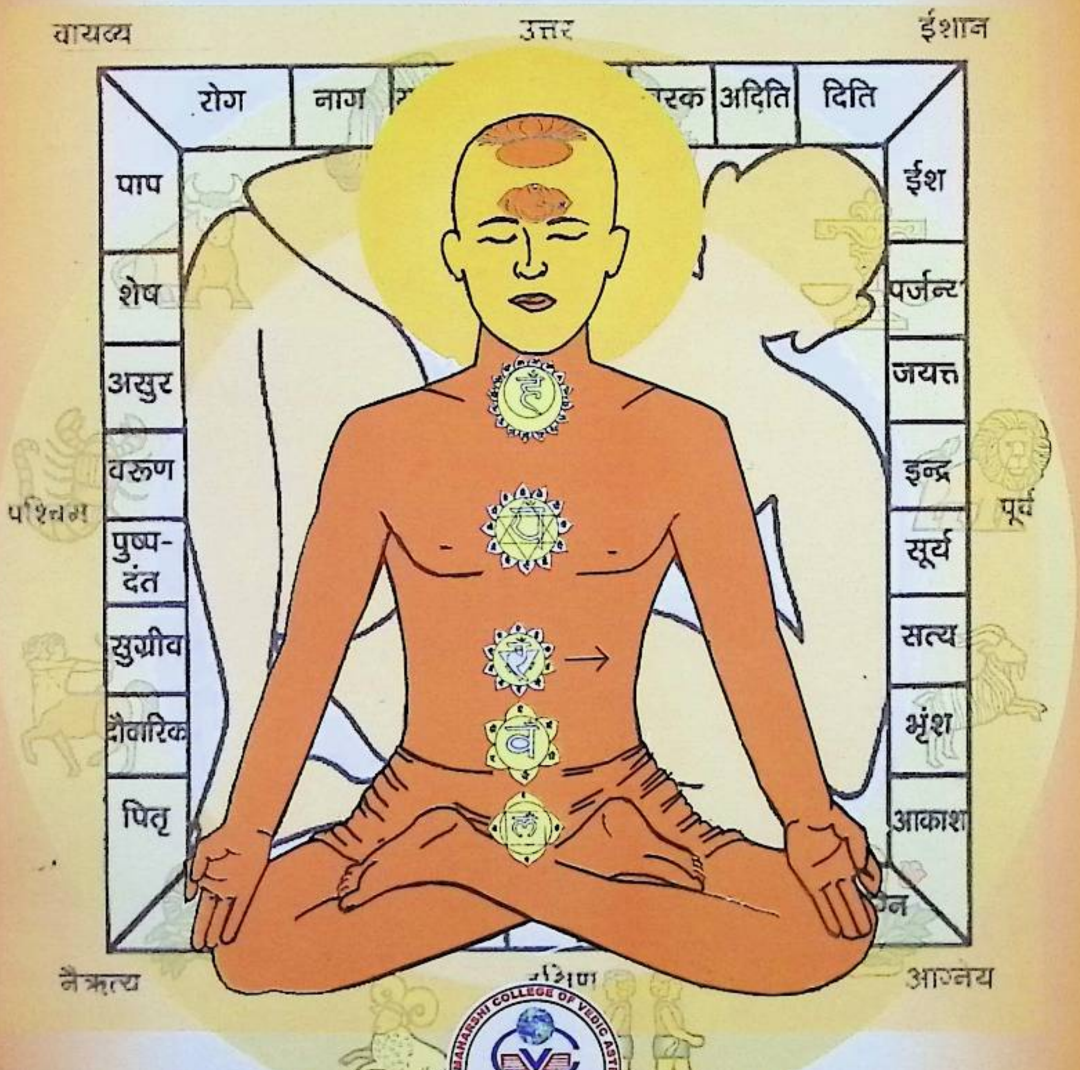

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 1

अनुक्रमणिका

पाठ 1 :– मंगलाचरण	3–4
पाठ 2 :– भूमिका	5–7
पाठ 3 :– हस्त रेखा शास्त्र	8–11
पाठ 4 :– प्राचीन भारतीय हस्त रेखा शास्त्र	12–26
पाठ 5 :– ज्योतिष एवं हस्त रेखा शास्त्र	27–30
पाठ 6 :– हस्त रेखा शास्त्र के लाभ	31–32
पाठ 7 :– हस्त रेखा के मूल सिद्धांत	33–36
पाठ 8 :– दाँया हाथ और बाँया हाथ	37–41
स्व अभ्यासः–1	42–43
पाठ 9 :– हस्त रेखा शास्त्र में अंगों का विवरण	44–80
स्व अभ्यासः–2	81–82

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगलाचरण

कराग्रे वसते लक्ष्मी
करमध्ये सरस्वती ।
कर पृष्ठे स्थितों ब्रह्मा
प्रभाते कर दर्शनम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्य के हाथों के अग्र भाग में स्वयं श्री लक्ष्मीजी का निवास होता हैं। हाथों के मध्य भाग में विद्या की देवी वीणावादिनी सरस्वती का निवास हैं। हाथों के पृष्ठ भाग में सृष्टि के रचयिता श्री ब्रह्माजी रहते हैं। अतः प्रातः काल उठते ही अपने हाथों के दर्शन मात्र से इन देवी-देवताओं के दर्शन हो जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

यदि कोई विज्ञान, कला एवं काव्य आरम्भ से ही मानव-जाति के सुधार और प्रगति से प्रेरित होता दिखाई दे तो उसको वह प्रोत्साहन और मान्यता प्राप्त होनी ही चाहिये जिसका वह अधिकारी हैं। मनुष्य की प्रकृति के विश्लेषण के विश्लेषण, अध्ययन एवं परीक्षण करने के जितने भी माध्यम हैं, उनमें सबसे अधिक महत्त्व हस्तरेखा विज्ञान को दिया जाना चाहियें, क्योंकि यह एक अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम हैं। इस विज्ञान के द्वारा न केवल व्यक्ति की त्रुटियों को जाना जा सकता हैं अपितु उन त्रुटियों को दूर करने के उपायों का भी पता लगाया जा सकता हैं। हाथ मनुष्य के आचरणरूपी बक्से की चाबी है, जिसके भीतर प्रकृति ने प्रेरक शक्ति और उसकी उन अन्तर्निहित क्षमताओं, गुणों एवं कार्यशक्ति को बंद किया हुआ है जिनके द्वारा हम स्वयं को पहचान कर अपने जीवन को रूपान्तरित कर सकते हैं। हम में से शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने अपने अतीत का सर्वेक्षण करके यह अनुभव न किया हो कि विगत जीवन के कितने मास, वर्ष अथवा बहुत बड़ा हिस्सा माता-पिता अथवा अपने अज्ञान के कारण निरर्थक गंवा दिया। हमारे पूर्वजों का यह कहना है कि ''अपने आपको पहचानों'' इतना व्यापक और अर्थपूर्ण है कि उसको भूलना अत्यन्त कठिन हैं। प्रकृति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करके जब हम उसके अस्तित्व और महत्व को स्वीकार कर लेते हैं तो हमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसे अध्ययन और पठन पर भी विचार करना चाहिये जो हमें इस सम्बन्ध में और अधिक ज्ञान देने में सहायक हो सकें। अपने बारे मे ज्ञान प्राप्त करके ही हम अपने ऊपर अधिकार भी रख सकते है और अपनी उन्नति करते हुए मनुष्य जाति की भी उन्नति कर सकते हैं। हस्तरेखा–विज्ञान स्वयं को जानने से सम्बन्ध रखता हैं।

हस्तरेखा–शास्त्र हाथ की बनावट पर आधारित हैं इन आकृतियों अथवा बनावटों को हम पर्वतों का नाम देते हैं, जिनकी संख्या सात हैं। ये आकृतियाँ अथवा बनावटें अंगुलियों के मूलाधार में और हाथ के किनारों या कोनों में स्थित हैं।

इनके विकास और विभिन्न संयोजनों का अध्ययन करके ही हम व्यक्ति के चरित्र का अनुमान लगा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी इस शास्त्र को ठीक समझने में सहायक होती हैं। जैसेः–चलते समय हाथ की स्वाभाविक गति–विधि, त्वचा की प्रकृति, हाथ की सुसंगति, हाथ और नाखूनों का रंग, हाथों पर उगे हुए बाल, तीन लोक कहे जाने वाले तीन खण्ड़ों में विभाजित हाथ, अंगुलियों की बनावट, आकृति और उनका अलग–अलग जुड़ाव, अंगुलियों के अग्रभाग या सिरों की बनावट, ग्रन्थिल या गांठ्दार अंगुलियां, कोमल अथवा कठोर अंगुलियाँ, लम्बी अथवा छोटी अंगुलियां तथा अंगूठे की बनावट आदि।

इसलिए इन सभी अंगों या तत्त्वों के बारे में पूरी और सही जानकारी प्राप्त करना बहुत आवश्यक हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस प्रकार मानव–जाति के अध्ययन–अनुशीलन में नाक, कान, आंख व मुख आदि के स्थान नियत हैं, उसी प्रकार व्यक्ति के हाथ पर भी मस्तिष्क रेखा, जीवन रेखा आदि के लिये उपयुक्त स्थान नियत हैं। जैसे–जैसे अध्ययन और अभ्यास के द्वारा इस विषय के अध्येतओं ने प्रगति की, उन्होंने हाथ में पाये जाने वाले चिन्हों और रेखाओं आदि का नामकरण भी किया। जैसे मानसिक स्थिति से सम्बन्ध रखने वाली रेखा को मस्तिष्क रेखा, अनुराग से सम्बन्धित रेखा को हृदय रेखा, जीवनशक्ति से सम्बन्धित रेखा को जीवन रेखा आदि नाम प्रदान किये। इसी प्रकार उन्होंने हथेली पर मौजूद अनेक चिन्हों और पर्वतों को भी नाम दिये

वर्तमान में हम किसी भी जातक के हाथ को देखकर यह बता सकते है कि एक ही श्रेणी का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग हमेशा से क्या करते हैं। इसी प्रकार ऐसे लोगों के सम्भावित भविष्य के बारे में भी हमें सामान्यतः पता रहना चाहिए। यह समझने वाली बात है कि भूत, वर्तमान और भविष्य का सही अध्ययन जातक के पर्वत प्रकार को जानने पर ही मालूम होता हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र

हाथों की संरचना, उसका आकार एवं उनमें स्थित रेखाओं का अध्ययन हस्त रेखा कहलाता हैं।

प्रकृति में ईश्वर ने जितने भी प्राणी बनाये है। उनमें से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ हैं। अन्य सभी जीव जंतुओं की तुलना में मनुष्य का मस्तिष्क सबसे अधिक विकसित होता हैं। मनुष्य के मस्तिष्क में तर्क शक्ति उसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्य के हाथों का उसके मस्तिष्क से सीधा संबंध होता हैं। कई नसे व तंत्रिकाओं द्वारा मनुष्य का मस्तिष्क उसके हाथों से जुड़ा हुआ होता हैं। कई प्रकार की चेतनाएं मनुष्य के हाथों से ज्ञात होती हैं। हाथों की ऊर्जा, शक्ति एवं क्रियाशीलता मस्तिष्क के प्रभाव से ही होती हैं। वास्तव में मनुष्य के हाथ उसके मस्तिष्क का दर्पण होते हैं। यही कारण है कि अन्य जीव जंन्तु जिनके मस्तिष्क कम विकसित होते हैं, उनके हाथों पर रेखाओं की संख्या भी कम होती हैं।

हाथों के आकार, प्रकार, संरचना एवं उनमें स्थित रेखाओं के सूक्ष्म अध्ययन करके किसी भी मनुष्य की मानसिक स्थिति के बारे में पता लगाया जा सकता हैं। हस्त रेखा शास्त्र में इन्हीं तथ्यों का अध्ययन किया जाता हैं।

वर्तमान समय में हर मनुष्य की इच्छा होती है कि वह अपने जीवन को किस तरह सुखी एवं समृद्ध बनाएं। मनुष्य प्रायः अच्छा पद, धन, मान–सम्मान, प्रतिष्ठा, दैनिक जीवन में उपयोग की जाने वाली भौतिक वस्तुएँ, वाहन, इत्यादि को प्राप्त करने की इच्छा रखता है जिसको पूरा करने के लिए वह प्रयत्न भी करता है परंतु हर मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त नहीं होती हैं। जब भरसक प्रयासों के बाद भी मनुष्य असफल होता है तो वह स्वयं के प्रयासों का मुल्याकंन करता हैं। प्रायः यह देखा गया है कि मनुष्य की सफलता व असफलता के पीछे उसकी मेहनत व भाग्य ही प्रमुख कारण होते हैं। इस कारण मनुष्य अपने भविष्य को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानने के प्रति उत्सुक होता हैं।

भविष्य कथन की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं जैसे ज्योतिष, रमल, सामुद्रिक शास्त्र, अंक ज्योतिष, हस्त रेखा शास्त्र इत्यादि। इनमें से सर्वाधिक प्रचलित है हस्त रेखा शास्त्र। हस्त रेखा शास्त्र एक अत्यंत प्राचीन शास्त्र है जो लोगों के मध्य अत्यंत प्रचलित हैं। इसकी लोकप्रियता का कारण है कि किसी सामग्री की एवं गणित की आवश्यकता नही होना। हस्त रेखा से भविष्य कथन के लिए केवल मनुष्य की हथेली की आवश्यकता होती हैं। अतः हस्त रेखा शास्त्र भविष्य कथन का एक सरल एवं सुविधाजनक तरीका हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हर व्यक्ति के मन में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि हस्त रेखा शास्त्र के आधार पर किया गया फल कथन कितना विश्वसनीय हैं? कुछ लोग यह भी समझते है कि मात्र हथेली की रेखाओं के आधार पर भविष्य कथन कैसे किया जा सकता हैं। कोई भी सिद्धांत तथ्य के तराजु पर तोला जा सकता हैं। जैसे एक चिकित्सक जीभ, आँखों एवं नाड़ी देखकर शरीर के आंतरिक अंगों के बारे में पता लगाता है। ठीक उसी प्रकार हाथ में स्थित रेखाएँ मनुष्य के मस्तिष्क में चल रही घटनाओं की सूचना देती हैं। जिस प्रकार किसी रोग को पहचानने की क्षमता चिकित्सक के पास होती हैं। उसी प्रकार हस्त रेखाओं को पढ़ने की क्षमता एक हस्त रेखा विशेषज्ञ के पास होती हैं। कोई रोग आगे चलकर किस स्थिति में पहुँचेगा यह चिकित्सक बता सकता है उसी प्रकार हस्त रेखा शास्त्र भी रेखाओं से किसी भी व्यक्ति का भविष्य पढ़ सकता हैं उसे आवश्यकता होती है एक अंतदृष्टि एवं हस्त रेखा के सही सिद्धांतों के ज्ञान की। हस्त रेखा शास्त्र के प्रत्येक सिद्धांत को यदि व्यवहारिक रूप में परखा जाये तो इस विज्ञान की सत्यता एवं शुद्धता एक निर्विवाद सत्य बन कर सामने आती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन भारतीय हस्त रेखा शास्त्र

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति हैं। भारत के ऋषियों एवं मुनियों ने कई विषयों का गहन अध्ययन किया। यह अध्ययन प्रामाणिक था एवं विज्ञान और गणित की सहायता से किया गया था। विश्व में गणित एवं एस्ट्रोनामी का सर्वाधिक विकास भारतीय संस्कृति में ही हुआ। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है न कि सूर्य पृथ्वी के चारों आरे घूमता हैं। यह मूल एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत भी भारतीय विद्वानों द्वारा खोजा गया हैं।

भारत में अत्यंत प्राचीनकाल से ही एक विशेष विद्या प्रचलित थी जिसे **सामुद्रिक शास्त्र** कहते हैं। सामुद्रिक शास्त्र के अंतर्गत मनुष्य के शरीर के विभिन्न भागों एवं लक्षणों का अध्ययन किया जाता हैं एवं उनके आधार पर भविष्यफल कथन किया जाता था।

प्राचीन ग्रंथों में भी सामुद्रिक शास्त्र का उल्लेख मिलता है जैसे रामायण, महाभारत इत्यादि ग्रंथों में अनेक बार सामुद्रिक शास्त्र का उल्लेख किया गया हैं।

प्राचीन भारतीय हस्त रेखा शास्त्र के ज्ञाता

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के सिद्धांतों का विवरण अनेक ऋषियों एवं विद्वानों ने किया जिसका उल्लेख उनके द्वारा लिखे गए ग्रंथों में मिलता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ प्रमुख विद्वानों एवं सामुद्रिक शास्त्र में उनके द्वारा किये गये योगदान का विवरण निम्नलिखित हैं।

समुद्र ऋषि

सर्वप्रथम समुद्र नाम ऋषि ने सामुद्रिक शास्त्र का अध्ययन किया एवं इससे प्राप्त तथ्यों का वर्णन **सामुद्रिकम** एवं **अंग लक्षण** नामक शास्त्र में किया।

समुद्र ऋषि के नाम पर ही इस विज्ञान को सामुद्रिक शास्त्र का नाम दिया गया। यह माना जाता है कि स्वयं ब्रह्मा ने समुद्र ऋषि को इस ज्ञान से अवगत कराया था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नारद ऋषि

प्राचीन भारतीय ऋषियों में नारद ऋषि भी सामुद्रिक शास्त्र के ज्ञाता थें। नारद ऋषि ने सामुद्रिक शास्त्र का अध्ययन किया एवं संबंधित तथ्यों को नारद पुराण में लिखा।

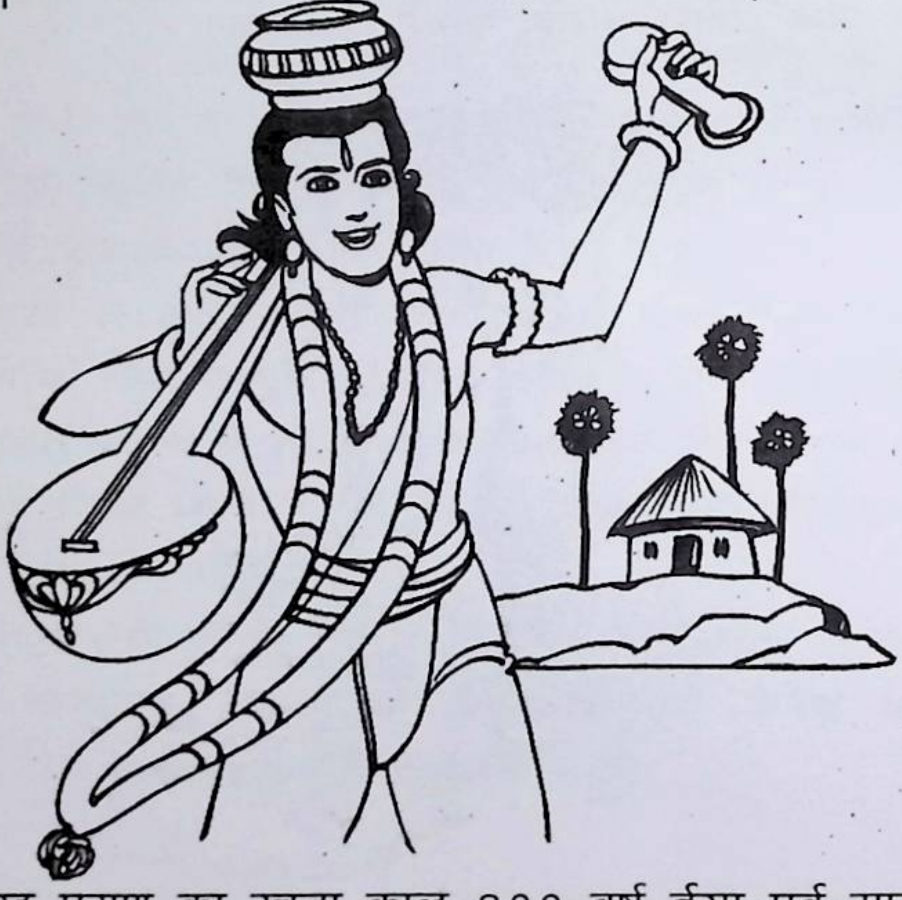

नारद पुराण का रचना काल ८०० वर्ष ईसा पूर्व माना जाता हैं। नारद पुराण में शरीर के विभिन्न अंगों का अध्ययन कर उनके आधार पर मानव के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का फल कथन किया गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महर्षि वेद व्यास

महर्षि वेद व्यास वेदों एवं महाभारत के रचयिता हैं। महाभारत में भी कई बार सामुद्रिक शास्त्र का उल्लेख मिलता हैं।

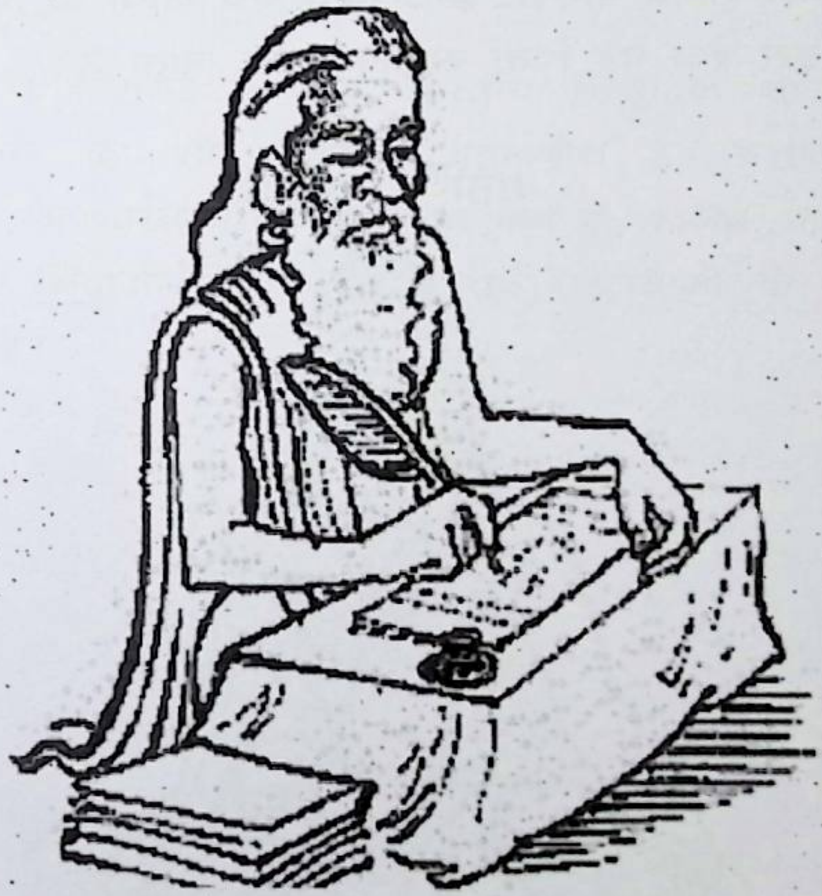

श्री वेद व्यास स्वयं सामुद्रिक एवं शकुन शास्त्र के ज्ञाता थें। इन्होंने अपनी रचनाओं में सामुद्रिक शास्त्र का वर्णन भी किया है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महर्षि वेद व्यास सामुद्रिक शास्त्र में किये गये कार्यों का महर्षि पाराशर ने अध्ययन किया एवं नये सिद्धांतों एवं तथ्यों का योगदान दिया। भारतीय सामुद्रिक शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में महर्षि पाराशर द्वारा किये गये कार्यो के आधार पर उन्हें इस क्षेत्र का पिता स्वरूप माना जाता है।

महर्षि पाराशर

महर्षि पाराशर भी एक विद्वान ऋषि थे जिन्होनें सामुद्रिक शास्त्र से संबंधित अनेक सिद्धांतों का वर्णन किया है इनके लिखे हुए दो ग्रंथ में अंग लक्षण एवं सामुद्रिक शास्त्र का विवरण है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रंथ के नाम निम्नलिखित है।

1. वृहत् पाराशरी
2. लघु पाराशरी

वराहमिहिर

महर्षि पाराशर के बाद भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में वराहमिहिर का भी योगदान अतुलनीय हैं। वराहमिहिर मूलतः मध्य भारत के अवंतिका(वर्तमान में उज्जैन) नाम के कस्बे के निवासी थें। वे गणित एवं एस्ट्रानामी के प्रकांड विद्वान थे।

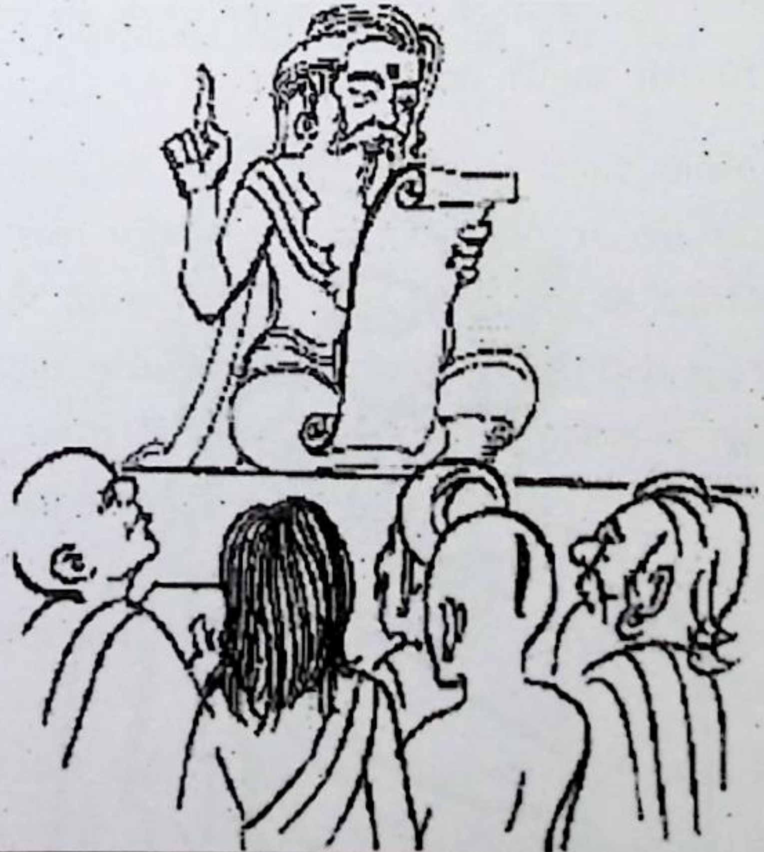

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वराहमिहिर ने शरीर विशेषतः हाथों में पायी जाने वाली रेखाओं और चिन्हों का अध्ययन किया। इनके आधार पर भविष्यफल कथन के लिए उन्होंने एक पुस्तक की रचना भी की है जिसका नाम वृहत् संहिता हैं।

पाराशर स्मृति के बाद वृहत् संहिता में भारतीय सामुद्रिक शास्त्र की उत्कृष्ठता का उल्लेख हैं।

ज्योतिषी एवं हस्त रेखा शास्त्र इन दो पुरानी विद्याओं का जन्म एवं प्रचार प्रसार भारत देश में ही हुआ। भारत के प्राचीन मंदिरों की निर्माण शैली में प्रयुक्त तथ्यों का उपयोग यह बताता है कि आज से हजारों साल पहले भी मनुष्य इन क्षैत्रों में कितनी प्रगति कर चुका था

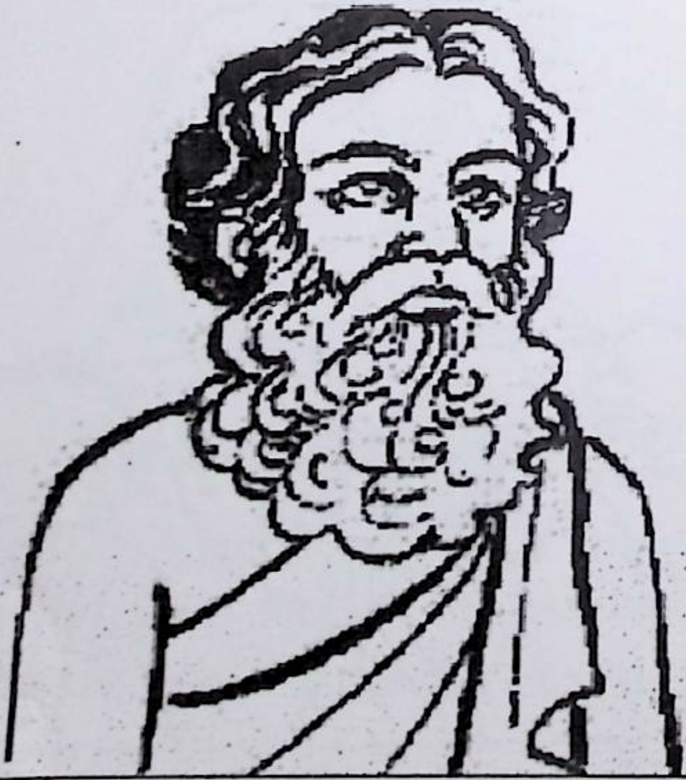

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत के विद्वानों से यह ज्ञान दूर देशों में फैला। हस्त रेखा शास्त्र से संबंधित नियमों एवं सिद्धांतों का समय के साथ साथ प्रचार प्रसार होता गया। चीन, तिब्बत, पर्सिया, इजिप्त, इत्यादि देशों में भी हस्त रेखा शास्त्र प्रचलित थी। सर्वप्रथम हस्त रेखा शास्त्र का सबसे प्रमाणिक अध्ययन रोम सभ्यता में किया गया। 423 वर्ष ईसा पूर्व में एनाक्सोगोरस नामक हस्त रेखा शास्त्र के एक विद्वान थे जिन्हें इस विज्ञान के संबंध में अच्छा ज्ञान था। जुलियस सीजर के काल में हस्त रेखा शास्त्र का ज्ञान और मान दोनों ही बढ़ें। एरिस्टाटल, मैग्मस, आगस्टस, इत्यादि हस्त रेखा शास्त्र को समझते थे। इतिहास की पुस्तकों में इस तथ्य का उल्लेख होता हैं।

मध्यकाल में हस्त रेखा का ज्ञान बंजारे जाति के लोगों से यूरोप तक पहुँचा। इस समय यूरोप में चर्च को सर्वोत्तम स्थान दिया जाता था। वे स्वयं को ईश्वर के प्रतिनिधी कहते थे। मध्ययुग इतिहास में अंधकार काल (Dark age) के नाम से जाना जाता हैं। इस काल में वैज्ञानिक खोजों का भी विरोध किया गया हैं। यही वह समय था जब हस्त रेखा शास्त्र को भी जादू-टोना माना जाने लगा परन्तु इस काल में भी कुछ जिज्ञासु हस्त रेखा के सिद्धांतों का अध्ययन करते रहें।

उन्नीसवीं सदी में विज्ञान के विकास के साथ साथ हस्त रेखा शास्त्र के क्षेत्र में भी परिवर्तन आने लगे। अब लोगों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने इसका महत्व समझा और हस्त रेखा एक शास्त्र विज्ञान के रूप में विकसित होने लगा। कई विद्वानों ने हस्त रेखा का गहन अध्ययन किया एवं कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाल कर हस्त रेखा के नियम प्रतिपादित किए। इन नियमों के आधार पर हस्त रेखा शास्त्र एक विस्तृत विज्ञान के रूप में विकसित हुआ जिसका अध्ययन रोचक एवं ज्ञानप्रद हैं। यह मनुष्य जाति के लिए भी अत्यंत सहायक सिद्ध होगा।

जब हम इस बात को मान लेते है कि हस्तरेखा–विज्ञान ऐसी महान जाति की देन हैं तो यही एक कारण पर्याप्त हैं कि हम इस विज्ञान को आदर की दृष्टि से देखें। हमें लगता है कि हस्तरेखा–विज्ञान विश्व के प्राचीनतम विज्ञानों में से एक हैं। इतिहास साक्षी है कि उत्तर–पश्चिमी भारत में जोशी जाति के विद्वान हस्तरेखा–विज्ञान का उपयोग करते थे और उसका प्रशिक्षण भी देते थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में सौर मंड़ल में स्थित ग्रहों व नक्षत्रों के मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। किसी व्यक्ति के जन्म के समय नक्षत्र मंड़ल में ग्रहों की स्थिति के आधार पर उस व्यक्ति की जन्म–पत्रिका बनाई जाती हैं। वर्तमान समय में नक्षत्र मंड़ल में विभिन्न ग्रहों का विभिन्न राशियों पर स्थिति सुनिश्चित की जाती हैं। इस स्थिति का मनुष्य के जीवन, व्यक्तित्व एवं स्वभाव पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

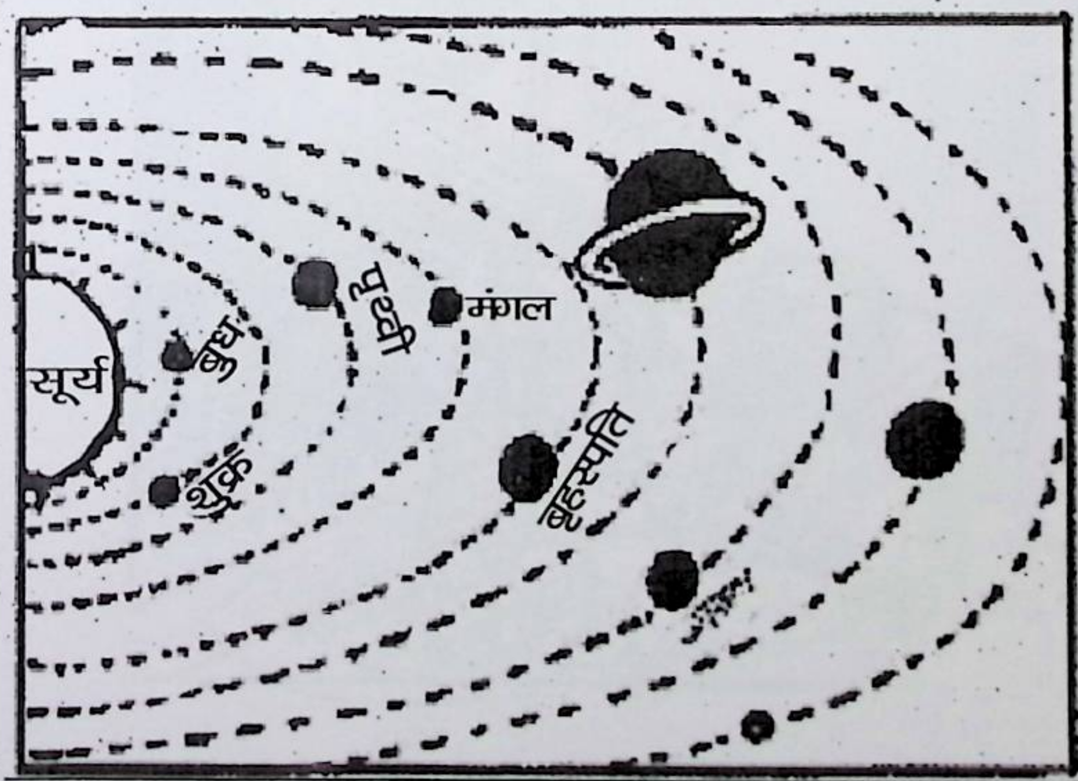

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष शास्त्र की परिभाषा सरल शब्दों में हैः–

ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्।

उपरोक्त लोक का अर्थ हैं नवग्रहों एवं नक्षत्रों के विषय में विवरण देने वाला शास्त्र ज्योतिष शास्त्र कहलाता हैं। पृथ्वी इत्यादि ग्रह सूर्य की सौरमण्ड़ल में परिक्रमा करते हैं। पृथ्वी पर सूर्य और अन्य तारों की किरणें आती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनका प्रभाव मानव जीवन को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता है। मानव जीवन पर इन ग्रहों के प्रभाव का सूक्ष्म अध्ययन ही ज्योतिष शास्त्र का आधार हैं।

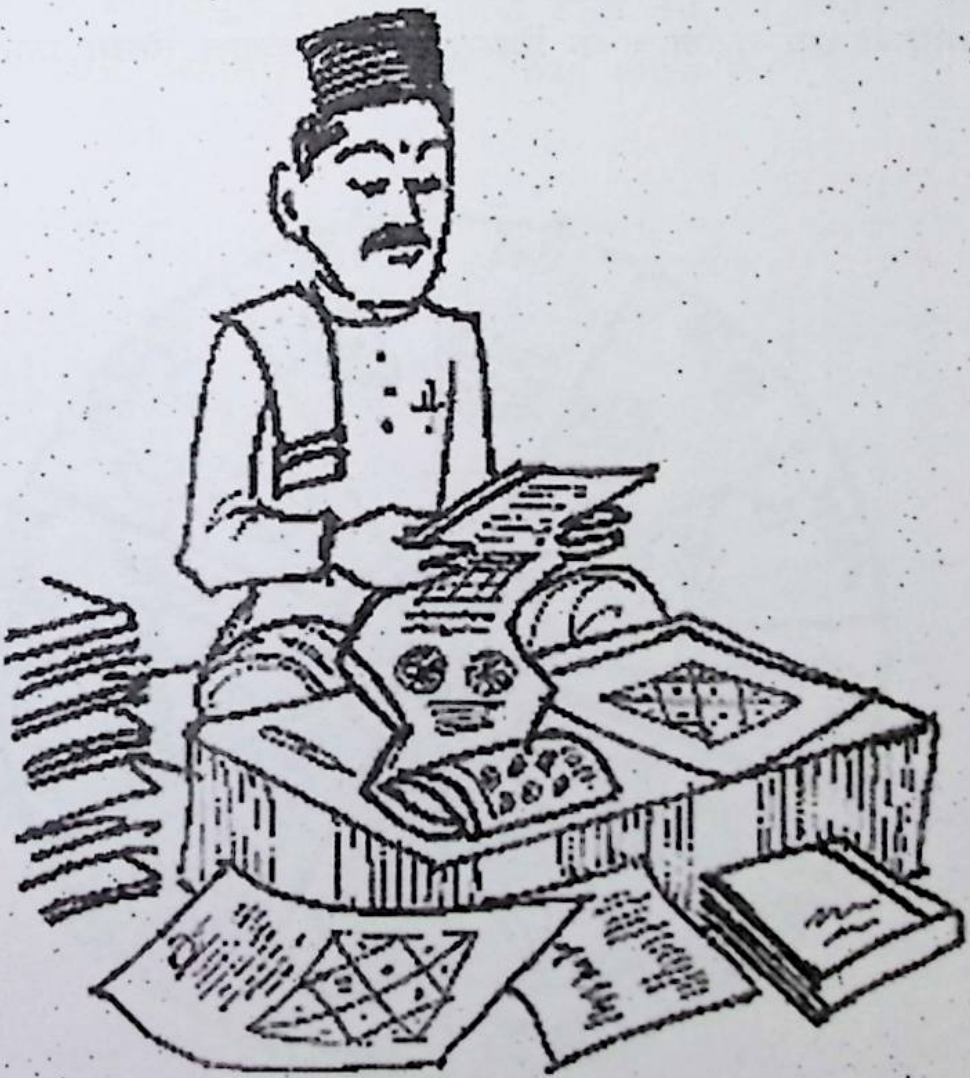

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी व्यक्ति के जन्म के समय स्थित ग्रहों का सूक्ष्म गणितीय अध्ययन किया जाता हैं। पंचांग इत्यादि की सहायता से उस व्यक्ति की जन्म पत्रिका बनायी जाती हैं। इन सब में कई प्रकार की गणनाओं की आवश्यकता होती हैं। इस जन्म पत्रिका के आधार पर उस व्यक्ति के भूत, भविष्य एवं वर्तमान के विषय में फलकथन किया जाता हैं।

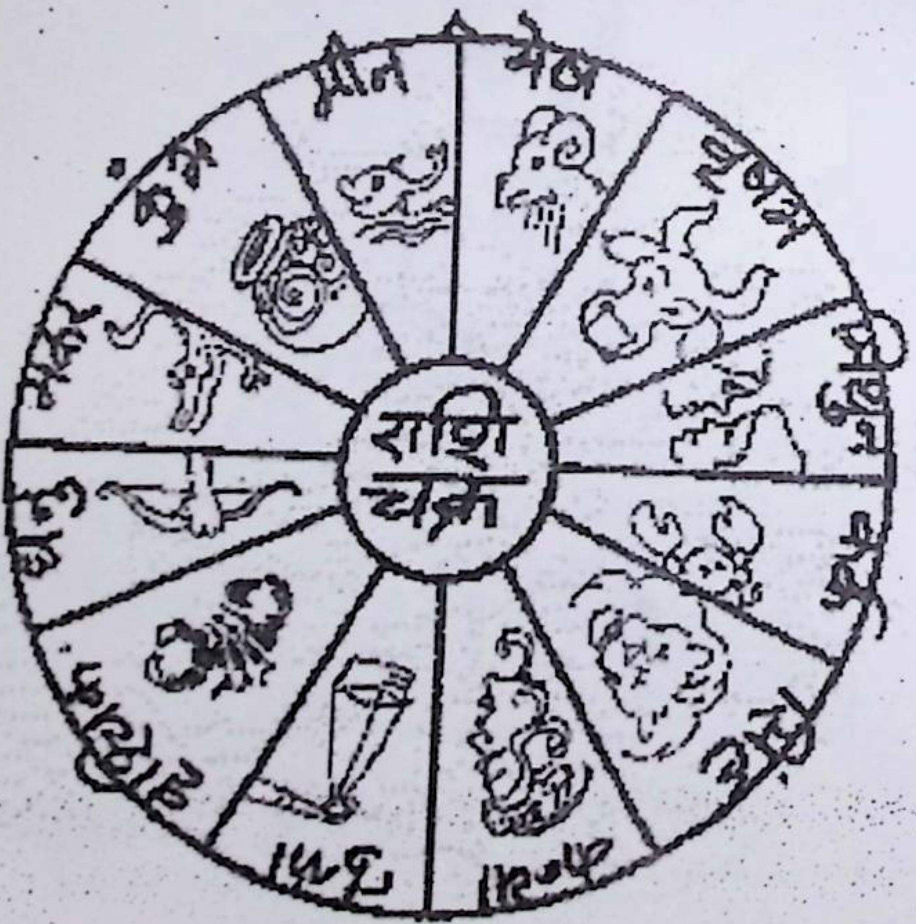

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार संसार के सारे मनुष्यों को 12 राशियों में विभाजित करते है तथा प्रत्येक राशि पर ग्रहों की स्थिति के अनुरूप फल कथन किया जाता हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में विभिन्न ग्रहों की दशा एवं महादशाएं भी आती हैं। जिससे उस मनुष्य के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाऐं संबद्ध होती हैं। इन दशाओं का भी अध्ययन ज्योतिष शास्त्र में किया जाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र

मनुष्य के हाथों की संरचना, आकार एवं उनमें स्थित रेखाओं के आधार पर किसी मनुष्य के स्वभाव, व्यक्तित्व एवं भाग्य फल के अध्ययन व फल कथन को हस्त रेखा शास्त्र कहा जाता है।

हस्त रेखा शास्त्र हाथ में स्थित विभिन्न भागों जैसे हथेली, उंगलिया, अंगुठा, त्वचा इत्यादि का गहराई से अध्ययन कर मनुष्य के भाग्य, प्रकृति व अन्य घटनाओं के बारे में फल कथन किया जाता हैं। हस्त रेखा शास्त्र न सिर्फ हाथ से संबंधित है वरन् यह शास्त्र मुख, नाक, भौंहे, ललाट, पैर, पैर का अंगुठा इत्यादि की भी विवेचना व अध्ययन पर आधारित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में तुलना

ज्योतिष शास्त्र का आधार होता है किसी भी मनुष्य के जन्म के समय नक्षत्र व ग्रहों की उस समय की आकाशीय स्थिति। इसे ही आधार बनाकर उस मनुष्य के स्वभाव एवं भाग्य का फल कथन किया जाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र का मूल आधार होता मनुष्य के मस्तिष्क एवं उसके हाथों का संबंध।

यह माना जाता है कि मनुष्य के मस्तिष्क का दर्पण उसका हाथ होता है जिसका सूक्ष्मता पूर्वक अध्ययन करने पर मस्तिष्क के रहस्यों को समझा जा सकता हैं।

ज्योतिष शास्त्र में अध्ययन के लिए जन्म पत्रिका की आवश्यकता होती हैं। जिसे पंचांग की सहायता से कई गणनाओं के बाद बनाया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आजकल यह कार्य कम्प्यूटरों की सहायता से भी होता हैं परन्तु किसी मुनष्य की जन्म पत्रिका बनाने के लिए इन साधनों की आवश्यकता होती हैं। साथ ही साथ इनका सही उपयोग करने की विधि का ज्ञान भी आवश्यक हैं। इन सब के अभाव में न तो किसी मनुष्य की जन्म पत्रिका बन पायेगी न ही उसके भाग्य का फल कथन हो पायेगा।

हस्त रेखा शास्त्र के लिए मात्र किसी मनुष्य के हाथों की आवश्यकता होती हैं। हाथों के आकार, संरचना एवं हस्त रेखाओं का अध्ययन कर के किसी मनुष्य के भाग्य एवं स्वभाव का विचार किया जा सकता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म पत्रिका का निर्माण जन्म समय के अभाव मे नहीं किया जा सकता हैं। यदि किसी व्यक्ति का जन्म स्थान, जन्म दिनांक व समय ज्ञात न हो तो उसकी जन्म पत्रिका का निर्माण नहीं हो सकता हैं। परंतु ऐसे जातकों का भाग्य भी उनकी हस्त रेखाओं में पढ़ा जा सकता हैं। जिन व्यक्तियों के हाथ न हो केवल उनका भविष्य कथन संभव नहीं हैं। परंतु ऐसे जातक बहुत ही कम होंगे। यह भी देखा गया है कि बच्चे के जन्म का सही समय भी निश्चित रूप से ज्ञात नहीं होता फलस्वरूप गलत समय को लेकर बनी जन्म पत्रिका के आधार पर भाग्य का विश्लेषण भी गलत सिद्ध होता हैं। किंतु हस्त रेखा शास्त्र में मनुष्य के हाथों की रेखाएं एकदम सही होती हैं उनमें कोई गलती होने की संभावना शून्य होती हैं अतः सही प्रयास से किया गया फलकथन पूर्णतः सही सिद्ध होता हैं।

मनुष्य के द्वारा किये गये कर्मो के आधार पर उसकी हस्त रेखाओं में परिवर्तन होता रहता हैं जिससे उसके भाग्य का सटीक विश्लेषण किया जा सकता है परंतु ज्योतिष शास्त्र में जन्म के समय ग्रहों की स्थिति को आधार माना जाता है जिसमें परिवर्तन संभव नही होता हैं। वही हस्त रेखा शास्त्र के आधार पर मनुष्य के मस्तिष्क की वर्तमान स्थिति का ज्ञान होता हैं। जो अधिक उर्पयुक्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र के लाभ

हस्त रेखा शास्त्र का मनुष्य के जीवन में महत्व

हस्त रेखा शास्त्र एक ऐसा विषय है जो किसी मनुष्य के भविष्य कथन में अधिक उपयोगी होता है। किसी भी अन्य भविष्य कथन विद्या की तुलना में हस्त रेखा शास्त्र का अध्ययन अधिक लाभदायक एवं सरल होता हैं।

1. हस्त रेखा शास्त्र में मात्र हाथों के अध्ययन से ही मनुष्य का भविष्य बताया सकता हैं। ज्योतिष की तरह भाग्य का फल बताने के लिए किसी मनुष्य की जन्म पत्रिका या पंचांग की आवश्यकता नही होती हैं।

2. मनुष्य अपने जीवन के सारे कर्म अपने हाथों से ही करता हैं। उसके हाथों का सीधा एवं सघन संपर्क मस्तिष्क से होता हैं। अतः किसी मनुष्य के हाथ उसके व्यक्तित्व का दर्पण होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस प्रकार एक मजदुर के हाथ कड़े एवं खुरदुरे होते हैं उसी प्रकार कशीदाकारी करने वाली एक स्त्री के हाथ मुलायम एवं नरम होते हैं। ऐसा उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य की प्रकृति के अनुरूप होता हैं। मानव के हाथों की संरचना से उसके स्वभाव एवं व्यक्तित्व का अध्ययन आसानी से किया जा सकता हैं।

3. हर मनुष्य के विचारों में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं, विंचारों के अनुसार मनुष्य अपने कर्म करता हैं। विचार मस्तिष्क में पैदा होते है और मस्तिष्क का सीधा संपर्क हाथों से होता हैं फलस्वरूप कर्मो के साथ-साथ मनुष्य के हाथों की रेखाओं में भी परिवर्तन देखे जाते हैं।

4. जीवन रेखा मनुष्य के हाथों में पायी जाने वाली एक महत्वपूर्ण रेखा होती हैं। जिससे मनुष्य के जीवन में आने वाली दुर्घटनाओं एवं स्वास्थ्य से संबंधित कष्टों को पहचाना जा सकता हैं। समय रहते यदि इन समस्याओं के प्रति सावधानी रखी जाये तो वही दुर्घटनाओं को टाला जा सकता हैं।

हस्त रेखा शास्त्र के ज्ञान से यदि मनुष्य को पूर्व चेतावनी मिल जाये तो वह अपने कर्मो में सुधार कर उन दुष्प्रभावों को दूर करने का प्रयास कर सकता हैं। इस प्रकार हस्त रेखा की सहायता से आने वाले दुर्भाग्य को पहचान कर उसका उपाय किये जा सकते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र से संबंधित मूल सिद्धांत

हस्त रेखा शास्त्र भविष्य कथन के लिए एक महत्वपूर्ण विज्ञान हैं। हस्त रेखा शास्त्र सिखाने वाले एवं इसका अभ्यास करने वालो को यह ध्यान रखना चाहिए कि हस्त रेखा शास्त्र की गरिमा एवं महत्व को जन साधारण में प्रचार–प्रसार हो। इसे हल्के फूल्के मनोरंजन का साधन न बनाया जाये। अतः हस्त रेखा शास्त्र के आधार पर किसी व्यक्ति के भविष्य कथन से पहले निम्नलिखित तथ्यों एवं मूल सिद्धांतों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

1. हस्त रेखा शास्त्र में सुबह एवं रात का समय फल कथन के लिए वर्जित हैं। दिन में व अन्य समय में हाथ देखा जा सकता हैं।

2. जो व्यक्ति हाथ दिखाकर अपना भविष्यफल जानना चाहता हो वह स्वच्छ हो, साफ सुथरे कपड़े पहने हो एवं उसके हाथ पूरी तरह से स्वच्छ हों।

3. यह आवश्यक है कि उस व्यक्ति का विश्वास हस्त रेखा शास्त्र में हो। मात्र हस्त रेखा शास्त्र के ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए अथवा हंसी मजाक में हाथ न दिखायें। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसे हस्त रेखा शास्त्र की गरिमा के कारण हाथ देखने के लिए मना कर दें।

4. जिस स्थान पर हाथ दिखाया जा रहा हो वहाँ शांति एवं एकांत हो। शोरगुल वाले स्थानों में जैसे शादियों, पार्टियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवं सफर करते समय किसी व्यक्ति का हाथ न देखें। यह एकाग्रता को भंग कर सकता हैं जिससे प्रायः भविष्य कथन में गलतियाँ होने की संभावना रहती हैं।

5. हाथों पर समुचित मात्रा में प्रकाश होना चाहिए जिससे हाथ की सभी रेखाओं का सूक्ष्मता पूर्व अध्ययन किया जा सके। प्रायः अंधेरे में छोटी–छोटी रेखाएं दिखायी नही पड़ती है अतः प्रकाश के अच्छे स्त्रोत की व्यवस्था होनी चाहिए।

6. जिस स्थान पर हाथ देखा जा रहा हो वहाँ मूर्ख, धूर्त एवं पूर्वाग्रह से ग्रस्त लोग न हो ऐसे लोग एकाग्रता में विघ्न ड़ालते हैं एवं विषय की गंभीरता को न समझते हुए उसका उपहास करते है जिससे हस्त रेखा शास्त्र सहज मानसिक स्थिति में नहीं रह पाता हैं।

7. हाथ देखते समय मन में शांति होनी चाहिए। अति उत्साह, क्रोध, अति आत्मविश्वास, प्रेम, शत्रुता या मित्रता की भावना, क्लेश इत्यादि मनोभाव सटीक फल कथन में बाधक होते हैं। यदि चित्र अस्थिर हो तो कुछ समय के लिए फल कथन टाल देना चाहिए। मन में किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से फल के कथन में गलतियाँ होने की संभावना होती है।

8. हस्त रेखा शास्त्री के सामने उसका शत्रु हो या मित्र हो, इस विषय के न सोचते उसे निष्पक्ष होकर फल कथन करना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. यदि कोई व्यक्ति हस्त रेखा शास्त्र की योग्यता की परीक्षा लेने आया हो तो उसका हाथ देखने से स्पष्ट इंकार कर देना चाहिए। यह विद्या मात्र उन लोगों के लिए है जो इस पर विश्वास रखते हो। इसी प्रकार अंहकारी, झुठे, सत्ता के मद में चुर, भूखे–प्यासे, थके हुए एवं क्रोधित व्यक्ति का हाथ नहीं देखना चाहिए।

10. अत्यधिक ठंड़े अथवा गर्म स्थानों पर भी हाथ नहीं देखना चाहिए। हस्त रेखा परीक्षण ऐसे स्थान पर करना चाहिए जहां सुखद एवं सामान्य वातावरण हो एवं किसी प्रकार का व्यवधान न हो और हस्त रेखा शास्त्री अपनी पूर्ण एकाग्रता का प्रयोग कर सकें।

11. हस्त रेखा परीक्षण के समय यह आवश्यक है कि हाथ देखने वाला एवं दिखाने वाला दोनों की ही मानसिक एवं शारीरिक अवस्था सामान्य हों। दोनों ही तनाव की स्थिति में न हों एवं किसी तरह भी हड़बडी न करें।

12. हस्त परीक्षण करने के बाद जब तक किसी निष्कर्ष को दुबारा न जॉंच लिया जाये उसका भविष्य कथन न करें। पुरी तरह से जॉंच कर सोच कर एवं परख कर ही फल कथन करें।

13. किसी भी प्रकार के निष्कर्ष को विशेषतः मृत्यु से संबंधित फल कथन स्पष्ट शब्दों में न करें। हस्त रेखा शास्त्र को अपनी व्यवसायिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उस संदर्भ की संभावना व्यक्त करना चाहिए। वस्तुत जीवनकाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से संबंधित सभी फल कथनों को सोच समझ कर ही बताना चाहिए।

14. इसी प्रकार शुभ फल कथन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इसे सुन कर जातक अत्यंत उत्साहित न हो जायें।

15. ऐसा निष्कर्ष भी जातक को नहीं बताना चाहिए जिससे वह अनावश्यक रूप से चिंतित हो एवं उसके मन में तनाव पैदा हो जायें।

16. किसी भी प्रकार का भविष्य कथन करने के पहले हस्त रेखा शास्त्री को अपने शब्दों को तौल लेना चाहिए एवं इस बात का विचार भी कर लेना चाहिए कि इस रहस्योद्घाटन का जातक के मस्तिष्क पर क्या प्रभाव होगा? हस्त रेखा शास्त्री को अत्यंत सजग रह कर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि उसके कथन को तोड़ मरोड़ कर उपयोग न किया जा सके।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दाँया हाथ देखें या बाँया

एक हस्त रेखा विशेषज्ञ के सामने हाथ देखते समय एक महत्वपूर्ण प्रश्न होता है कि किसी जातक का दाँया हाथ देखा जाये या बाँया हाथ को देखा जाये।

पहले यह प्रथा प्रचलित थी कि जातक यदि स्त्री हो तो उसका बाया हाथ एवं पुरुष हो तो उसका दायां हाथ देखते थे। इसी प्रकार एक और धारणा प्रचलित थी कि वे लोग जो आर्थिक रूप से आत्म निर्भर न हो उनका बाया हाथ देखना चाहिए। इस धारणा के पीछे मुख्य कारण यह था कि पुरुष प्रायः अपने कार्यक्षेत्र में आत्मनिर्भर होते है एवं सभी कार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्य अपने दायें हाथ से करते हैं (कुछ लोगों को छोड़कर जो बाये हाथ का प्रयोग करते हैं) अतः वहीं हॉथ देखना चाहिए जो कर्म करता हो।

हस्त रेखा के क्षेत्र में कई विद्वानों द्वारा रूचि लेकर अध्ययन करने पर कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं।

बाया हॉथ मनुष्य के प्रारब्ध को दर्शाता हैं। यह भाग्य का वह अंश होता है जो प्रत्येक मनुष्य को जन्म के साथ ही प्राप्त होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह प्रदर्शित करता है कि पिछले जन्म के कर्मो के आधार पर इस जन्म में मनुष्य का भाग्य कैसा रहेगा। मनुष्य का दाया हाँथ उसके वर्तमान जीवन के कर्म फल को इंगित करता है। वर्तमान में उसके द्वारा किये जाने वाले अच्छे या बुरे कर्मो का उसके जीवन में प्रभाव का अध्ययन व सूचना मनुष्य के दायें हाथ से मिलती हैं। चाहे वह स्त्री हो या पुरूष दाया हाथ वर्तमान जीवन के कर्म फल का दर्पण हैं।

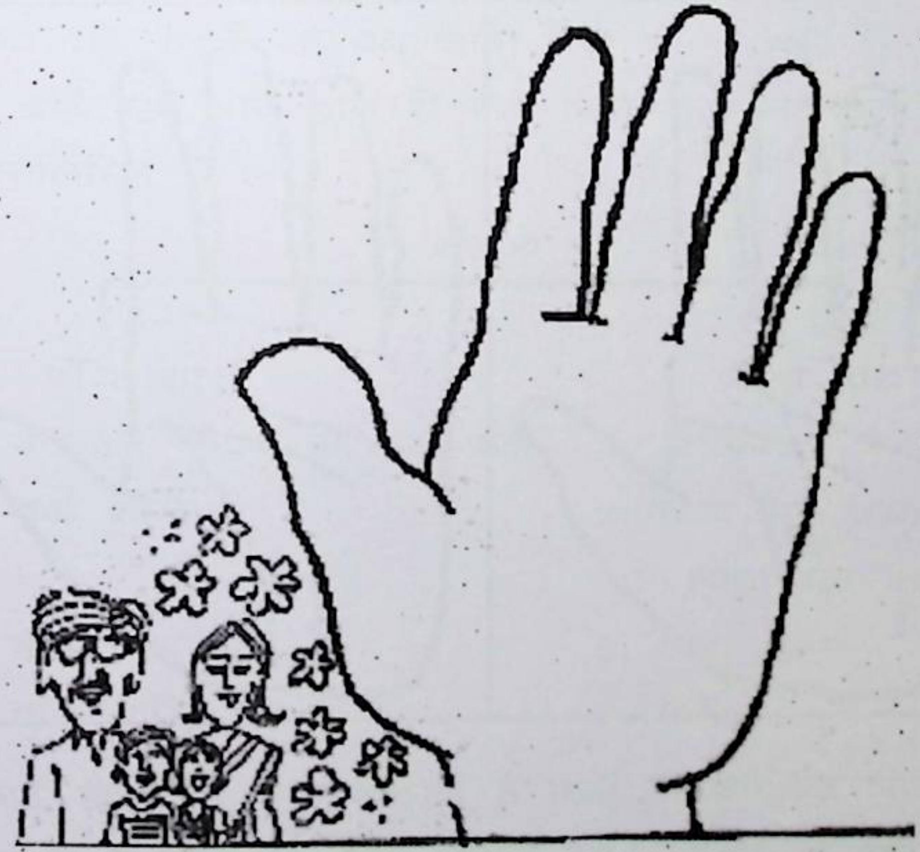

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंतु जो व्यक्ति बाये हाथ का अधिक प्रयोग करने वाले हो उनके हाथ में बाया हाथ कर्मफल का एवं दाहिना हाथ प्रारब्ध या भाग्य को इंगित करता हैं।

इस तथ्य से एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि मनुष्य अपने वर्तमान जीवन में किये जाने वाले कर्मो के आधार पर अपने पूर्व जन्म के कर्म फलों (प्रारब्ध) को सुधार सकता हैं। ऐसा प्रायः आयु एवं कर्मो के प्रभाव से होता हैं।

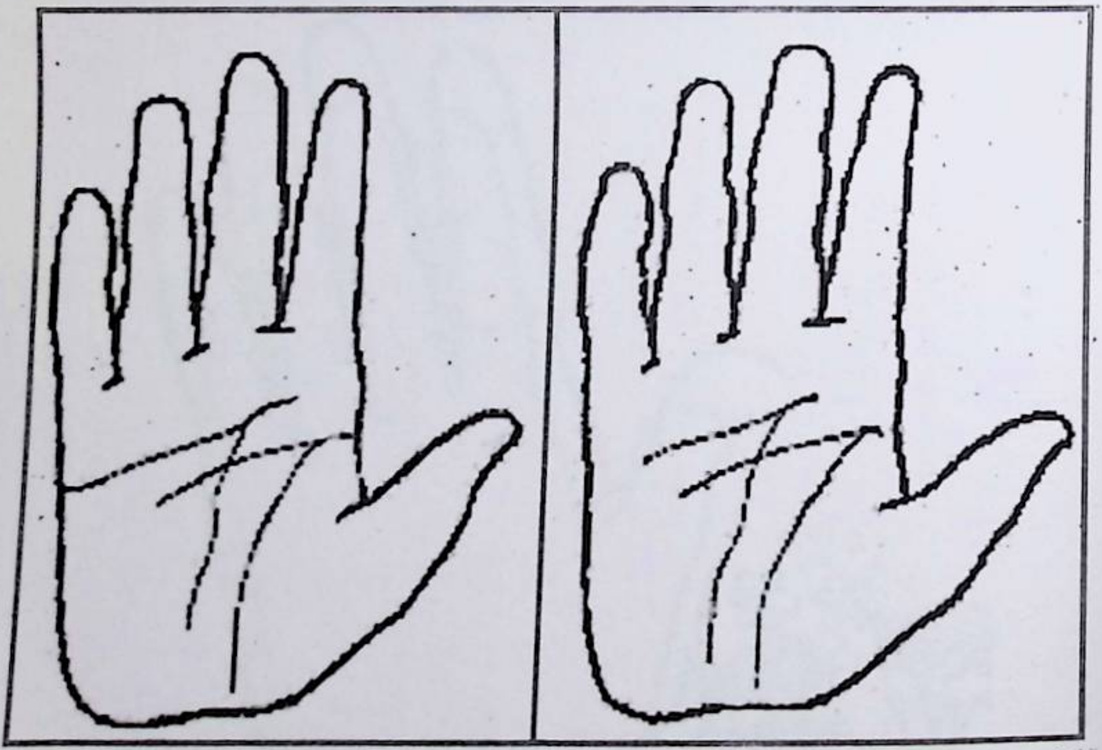

यदि कोई व्यक्ति ऐसा है जिसके दाये हाथ की रेखाएं बाए हाथ से अच्छी हो तो इसका अर्थ यह होता है कि उस मनुष्य के कर्म उसके प्रारब्ध से अच्छे है एवं अच्छे कर्म कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसने अपने भाग्य को चमकाया हैं। परंतु यदि किसी व्यक्ति के बाये हाथ में दायें हाथ की तुलना में अच्छी रेखाएं हो तो यह ज्ञात होता है कि उस व्यक्ति का प्रारब्ध अच्छा था। उसमें जन्म से ही विशेष योग्यताएं थी परंतु उसने सही कर्म न कर उस योग्यताओं का दुरूपयोग किया एवं उनसे पूरा लाभ नहीं उठा पाया।

इस प्रकार हर मनुष्य के जीवन में कर्मो का बड़ा महत्व होता हैं। अच्छे कर्म करने से भाग्य के दुष्प्रभाव भी कम होते है एवं गलत कर्म करने से मनुष्य का सोने जैसा अच्छा भाग्य भी मिट्टी सा बन जाता हैं।

दाँये एवं बाँये हाथ से देखे जाने वाले महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित हैं :-

मनुष्य

दाँया हाथ	**बाँया हाथ**
1. वर्तमान जीवन के कर्म फल	1. भावना
2. तर्क शक्ति	2.प्रारब्ध (पूर्व जन्म से लाया गया भाग्य)
3. ब्राह्य व्यवहार	3. अंतः प्रेरणा
4. वाक शक्ति	4. विवेक
	5. आत्मज्ञात
	6. क्षमता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्व अभ्यास –1

सही विकल्पों को चुनियें :–

1. निम्न में से कौन सा विद्वान प्राचीन हस्त रेखा शास्त्र से कोई संबंध नहीं रखता हैं ?

अ. नारद ऋषि ब. महर्षि वेद व्यास
स. महाराज भोज द. उपरोक्त सभी

2. सामुद्रिक शास्त्र का नाम निम्न में से किस ऋषि के नाम पर पड़ा ?

अ. समुद्र ऋषि ब. सामुद्रिक ऋषि
स. समुद्र कुमार ऋषि द. समुद्रजीत ऋषि

3. 800 वर्ष ईसा पूर्व में किस ग्रंथ में अंगो के अध्ययन से भविष्यवाणी का उल्लेख मिलता हैं ?

अ. महाभारत ब. अंग लक्षणम्
स. नारद पुराण द. ब्रह पुराण

4. दाया हाथ निम्न में से कौन से भाव को नहीं प्रदर्शित करता हैं।

अ. कर्म ब. प्रारब्ध
स. तर्क द. व्यवहार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. अंधकार काल किस युग को कहा गया हैं ?

अ. मध्य युग — ब. प्रारंभ युग

स. त्रेता युग — द. कलयुग

खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए :-

6. मनुष्य के हाथों के अग्र भाग में ....का निवास हैं।

7. मनुष्य की .... शक्ति उसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती हैं।

8. रामायण व महाभारत में भी प्राचीन ....शास्त्र का वर्णन मिलता हैं।

9. हाथ ....से .... के मध्य ही दिखाने चाहिए।

10. बायें हाथ से कार्य करने वालों का बाया हाथ .... को दर्शाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा शास्त्र में अंगो का विवरण

शरीर के विभिन्न भाग जिसका सामुद्रिक शास्त्र में अध्ययन किया जाता हैं, वो निम्नलिखित हैं।

1. शरीर
2. भुजा
3. दॅाया व बॅाया हाथ
4. हथेली
5. रेखाएं
6. पर्वत
7. अंगुठा
8. अंगुलियां
9. कर पृष्ठ
10. मणिबंध
11. चेहरा
12. मस्तक
13. आंखे
14. भौंहें
15. कान
16. नाक
17. होंठ
18. हाथ के विभाग
19. मन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. शरीर

मनुष्य का शरीर उसके बारें में काफी जानकारियां देता है।

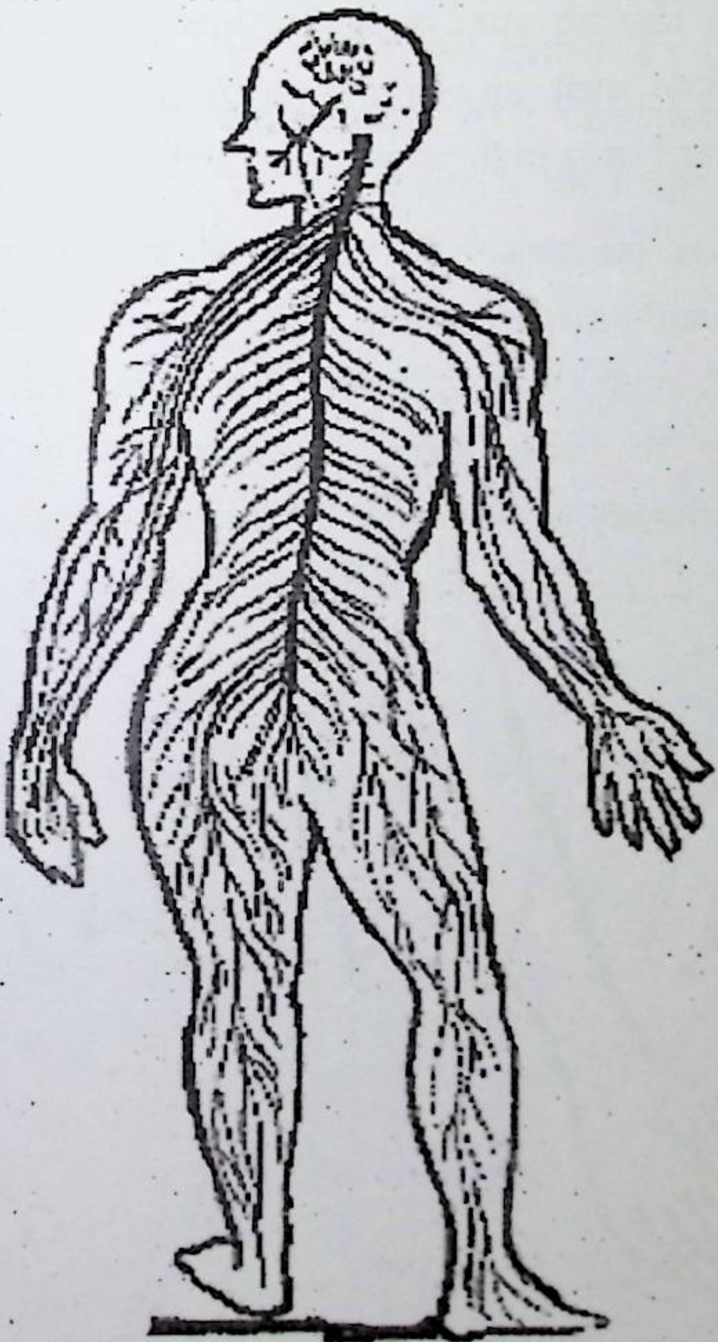

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. भुजा :–

शरीर में कंधे से हाथ शुरू होते है एवं कंधे से हथेली के अंतिम सिरे को भुजा कहते हैं। मानव शरीर में दो भुजाएं होती हैं एक दायीं ओर व एक बांयी ओर। भुजा में कंधा, कोहनी, लबं व हथेली मुख्य भाग होते हैं।

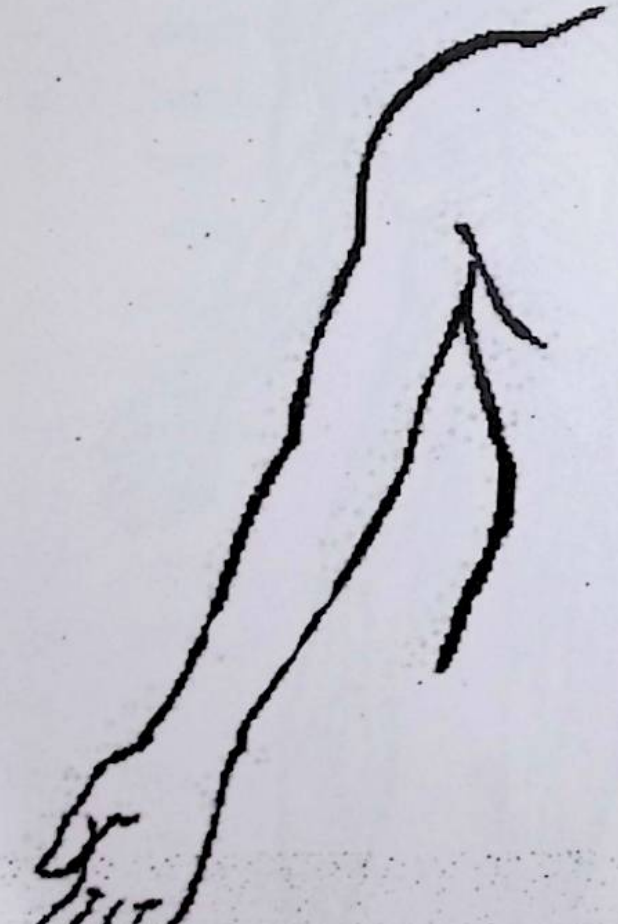

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. बांया व दायां हाथ

जिस प्रकार भुजा दो होती हैं उसी प्रकार प्रत्येक भुजा में हाथ होता हैं जिसे दायां हाथ व बांया हाथ कहा जाता हैं। बांया हाथ मनुष्य के प्रारब्ध को दर्शाता हैं। यह भाग्य का वह अंश होता है जो प्रत्येक मनुष्य को जन्म के साथ ही प्राप्त होता है। यह प्रदर्शित करता है कि पिछले जन्म के कर्मो के आधार पर इस जन्म में मनुष्य का भाग्य कैसा रहेगा। मनुष्य का दायां हाथ उसके वर्तमान जीवन के कर्म फल को इंगित करता हैं। वर्तमान में उसके द्वारा किये जाने वाले अच्छे या बुरे कर्मो का उसके जीवन में प्रभाव का अध्ययन व सूचना मनुष्य कें दाये हाथ से मिलती है। चाहे वह स्त्री हो या पुरूष दाया हाथ वर्तमान जीवन के कर्म फ़ल का दर्पण है।

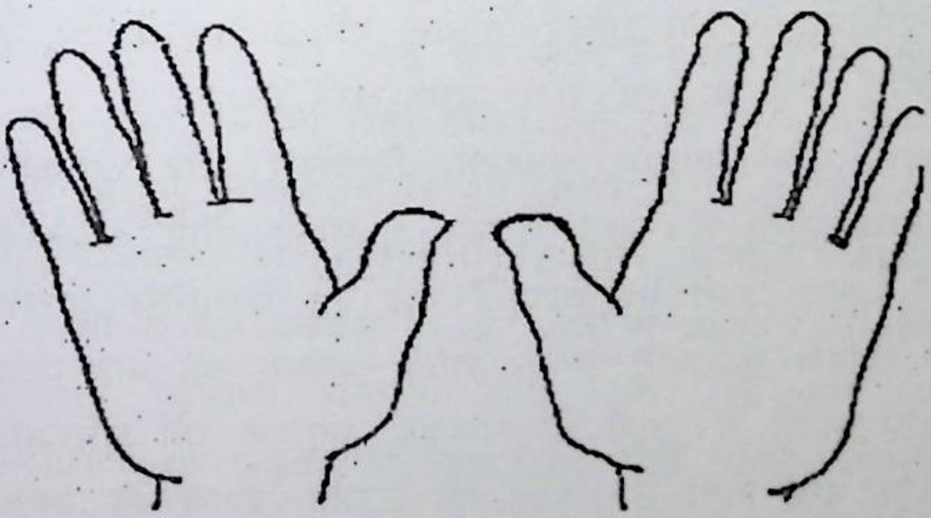

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंतु जो व्यक्ति बाये हाथ का अधिक प्रयोग करने वाले हो उनके हाथ में बाया हाथ कर्मफल का एवं दाहिना हाथ प्रारब्ध या भाग्य को इंगित करता है।

हाथों को चार प्रकार के भागों में विभाजित किया जा सकता हैं।

1. शिथिल हाथ 2. कोमल या नरम हाथ
3. लचीले हाथ 4. कठोर हाथ

1. शिथिल हाथ :–

शिथिल हाथ भींचने से दबाव या कसाव का विरोध नहीं करता। ऐसे हाथ में शारीरिक बल न के बराबर होता हैं। ऐसा हाथ वाला जातक सपने तो देखता हैं किन्तु कुछ नहीं कर पाता। ऐसा जातक मानसिक और शारीरिक सुख–सुविधाओं तथा सुन्दर परिवेश की अभिलाषा तो रखता है, किन्तु उन्हें पाने के लिए कुछ नहीं करता हैं।

अतः ऐसा जातक आलसी, विलासी और संवेदनशील स्वप्नद्रष्टा होता हैं। इस प्रकार आलस्य और अकर्मण्यता उसकी अन्य सभी विशेषताओं को भी प्रभावित करते हैं। इसके कारण बृहस्पति प्रकार वाले जातक की महत्त्वाकांक्षा व्यर्थ हो जाती हैं। सूर्य से समबद्ध जातक की प्रतिभा एवं उपलब्धि घट जाती हैं। बुद्ध की ऊर्जा खराब हो जाती हैं और मंगल तलवार के बजाय जीभ चलाने लग जाता हैं और शुक्र समबद्ध जातक निष्क्रियता के अभिशाप से ग्रस्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाता है।

2. कोमल या नरम हाथ :-

ऐसा हाथ जो बिना हड्डी का पिलपिला तो नहीं लगेगा, फिर भी यह अत्यधिक कोमल एवं मुलायम होता हैं। मुलायम हाथ में सक्रियता का अभाव रहता हैं परन्तु शिथिल हाथ वाला जातक सदा आलसी होता हैं। मुलायम हाथ वाले जातक को अपनी शक्ति और अपनी प्रतिभा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता हैं, किन्तु शिथिल हाथ वाले जातक पर ऐसे प्रोत्साहन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. लचीले हाथ :-

ऐसे हाथ को अंगुलियों से दबाने पर उसमें लचीलेपन, जीवन्तता तथा प्रतिरोध का अनुभव होता हैं। ऐसे हाथों को दबाने पर वे रबड़ की तरह दब जाते हैं। ऐसे हाथ मुलायम हाथों की तरह स्पन्जी नहीं होते। ऐसे हाथ वाले जातक बातें ही नहीं बनाते बल्कि काम भी करते हैं।

ऐसे जातक में जीवन्तता, स्फूर्ति, ऊर्जा, उत्साह और शक्ति होती हैं वह जीवन के हर क्षेत्र में आगे रहता हैं। वह अपने को अधिक थकाता नहीं, फिर भी वह समस्त सुख-साधनों को प्राप्त कर लेता हैं। उसकी स्फूर्ति, कर्मशीलता और ऊर्जा उसे संसार में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं। ऐसा जातक जिम्मेदारी का भली-भाँति निर्वाह करने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला तथा जीवन संघर्ष में विजयी होने के लिए विश्वस्त होता है।

4. कठोर हाथ :-

कम समझदार एवं कम बुद्धिमान लोगों के हाथ कठोर होते हैं और उनकी त्वचा भी मोटी और खुरदरी होती हैं। उस पर आपके दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। ऐसे हाथों में कठोरता होती हैं। ऐसे जातक अत्यन्त कर्मठ एवं परिश्रमी व्यक्ति होते हैं।

कठोर हाथ वाले जातक का मस्तिष्क इतना जड़ होता है कि वह आसानी से नये विचारों को ग्रहण नहीं कर पाता। ऐसे कठोर या जड़ वाले मस्तिष्क के लिए नये विचारों के साथ आगे बढ़ना, रूढ़िवादिता के दलदल से निकल पाना और मौलिक बनाना कठिन होता हैं।

कठोर हाथ सभी प्रकार के प्रभाव में न्यूनता लाकर सम्बन्धित जातकों की बुद्धि और प्रगति में गिरावट लाता हैं। जिस तरह आलस्य रहने से प्रतिभाशाली जातक भी अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, ठीक उसी प्रकार दिग्भ्रमित या पथभ्रष्ट कर्मशक्ति भी उन्हें बिगाड़ देती हैं।

यदि संगति सम्बन्धी परीक्षण करते समय बायां हाथ कोमल और दायां हाथ लचीला पाया जाता है तो यह संकेत देता है कि जातक की कर्मशक्ति में वृद्धि हो गयी हैं, परन्तु जब बायां हाथ कठोर और दायां हाथ कोमल हो तो समझ ले कि जातक आलसी हो गया हैं। इस तरह जातक की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मशक्ति के बढ़ने या घटने का सही निर्णय लिया जा सकता है।

5. हथेली

मणिबंध से लेकर अंगुलियों के अग्र भाग को सम्मिलित तौर पर हाथ कहा जाता हैं। हस्त रेखा शास्त्र में इस हाथ के अध्ययन को ही प्राथमिकता दी गई हैं एवं इस हाथ के माध्यम से फल कथन किया जाता हैं। हाथ के अनेक भाग है जैसे अंगुलिया, अंगुठा, मणिबंध, हथेली इत्यादि।

6. हथेली में रेखाएँ

हथेली में विभिन्न रेखाएँ विद्यमान रहती हैं जिन्हें गुणों के अनुसार विभिन्न नाम दिये गये है। इन रेखाओं के सुक्ष्म अध्ययन से हस्त रेखा शास्त्र का विशेषज्ञ फल कथन करता है।

हथेली में समस्त रेखाओं को पांच भ्रागों में बांटा जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. मुख्य रेखाएँ

मुख्य रेखाएँ सामान्यतः तीन होती हैं।

1. जीवन रेखा :–

जीवन रेखा जातक के शरीर की सामर्थता को प्रकट करती हैं। आमतौर पर हथेली के मध्य भाग से निकल कर कलाई की ओर सीधी जाने वाली रेखा ही जीवन रेखा हैं। इसके उत्पत्ति स्थल व जहां तक यह पहुँचती है इसी के आधार पर इसके गुणों व लक्षणों का फलित प्राप्त होता हैं। मुख्य रूप से जीवन शक्ति, काम भाव व रोग कि स्थिति इसी रेखा से प्राप्त होती हैं।

प्रत्येक जातक के हाथों में यह रेखा किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहती हैं। ऐसे कुछ मामलों में, जिनमें जीवन रेखा के अस्तित्व का बिल्कुल भी पता न लग सका, यह देखा गया कि ऐसे जातक शारीरिक शक्ति के बल पर नहीं, अपितु स्नायविक शक्ति के बूते पर जीवित रहते हैं तथा अधिक विश्राम और आहार–विहार में सन्तुलन स्थापित करके अपनी मानसिक शक्तियों के बल पर जीवन–ज्योति को बुझने से बचाये रखते हैं। हाथ में जीवन रेखा न रहने का अर्थ अत्यन्त नाजुक और मृत्यु की सम्भावनाओं से घिरा हुआ जीवन होता हैं। ऐसे जातकों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वास्थ्य सदैव नाजुक बना रहता हैं।

2. मस्तिष्क रेखा

मुख्य रूप से स्नायु संस्थान तथा मस्तिष्क की योग्यता इसी रेखा से ज्ञात होती हैं। पूरी हथेली मे मुख्य रूप से यही एक आड़ी रेखा होती हैं। अलग-अलग स्थलों से उदित होने पर इसके गुणों में विभिन्नताएं आती हैं। इस रेखा के विद्यमान होने से जातक में बुद्धि के घटक बढ़ जाते है तथा न होने से मस्तिष्क कमजोर व मानसिक उर्जा की कमी बताता हैं।

यह रेखा व्यक्ति की मानसिक एकाग्रता और आत्मसंयम की शक्ति को प्रकट करने वाली एक महत्वपूर्ण रेखा हैं। हमारे भाग्य का निर्माण करने में मस्तिष्क की अहम् भूमिका रहने से इस रेखा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। जातक की मनोदशा उसके भावी जीवन की बुनियाद होती हैं, अर्थात् स्वस्थ एवं सबल होने पर यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक को बुद्धिमान व कुशाग्र बनाती है तथा दुर्बल या क्षीण होने पर उसके जीवन को दुःखमय बना देती हैं। चरित्र की विशेषताओं को और अधिक दृढ़ता प्रदान करने या उन्हें पतन की ओर ले जाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

3. हृदय रेखा :–

कनिष्ठका के नीचे कुछ फासले से निकली महत्वपूर्ण रेखा ही हृदय रेखा हैं। हृदय रेखा भावना को प्रकट करती हैं। इसकी उपाधि अलग–अलग स्थलों पर सकारात्मक व नकारात्मक भाव उत्पन्न करती है। प्रेम, सहानुभूति, ईर्ष्या, इत्यादि भावों की उत्पत्ति की यह कारक रेखा हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. माध्यमिक रेखाएं

1. शनि रेखा
2. सूर्य रेखा
3. बुध रेखा
4. मंगल रेखा
5. काम भाव रेखा
6. संतान रेखा

स. गौण रेखाएं

1. शुक्र वलय
2. शनि मुद्रिका
3. गुण मुद्रिका
4. चंद्र रेखा
5. असंयम रेखा

द. मणिबंध रेखाएं

1. पहली रेखा
2. दूसरी रेखा
3. तीसरी रेखा
4. चौथी रेखा

य. प्रभाव रेखाएं

1. चिहृन
2. आडी रेखाएं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. ग्रह क्षैत्र

रेखाओं के अलावा हथेली में कई जगह पर उभार, कई जगह समतल तथा कई जगह ढ़ाल होते हैं जिन्हें पर्वत कहा जाता हैं। ग्रह क्षैत्र का हाथ में महत्वपूर्ण स्थान मानते हैं। ग्रह क्षैत्रों के उभार नैसर्गिक होते हैं। हाथ के काम करने से दबते नहीं है। पर्वत जातक के स्वभाव और उसके मानसिक झुकाव के विषय में रेखाओं से अधिक बताते हैं।

ये पर्वत अंगुलियो के आधार पर भी पाये जाते हैं। यदि ये पर्वत स्थान में थोड़ा तनिक उभार हो तो ये विकसित पर्वत कहलाता है। यदि ये उभार सख्त हो तो इसे अतिविकसित पर्वत कहते हैं। यदि उभार बिल्कुल न हो तो अविकसित पर्वत कहते हैं। यदि इस पर्वत का स्थान दबा हुआ हो तो उसे धंसा पर्वत कहते हैं। यदि पर्वत पर उभार न हो बल्कि उसके आस–पास उभार हो तो उसे विस्थापित पर्वत कहते हैं।

पर्वत भी कई प्रकार के होते हैं।

अ. सूर्य पर्वत

सूर्य पर्वत तीसरी अंगुली अनामिका के आधार पर हैं। इसे विद्या का स्थान कहा गया हैं। अध्ययन के अनुसार इसका प्रभाव उष्ण हैं। यह पर्वत स्थल जातक को महत्वपूर्ण दिखने की इच्छा को बताता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्यतः सूर्य ग्रह प्रधान जातक स्वस्थ ताकतवर प्रसन्न

रहने वाला, मिलनसार और आकर्षक होता हैं और इसके साथ ही सहज और स्वाभाविक व्यक्ति, बहुमुखी प्रतिभा का धनी और सौन्दर्य प्रेमी होता हैं।

ब. चंद्र पर्वत

कलाई के नीचे अंतिम छोर पर स्थित जगह पर चंद्र पर्वत स्थित हैं। इस स्थान को धर्मस्थल भी कहा गया हैं। इसका प्रभाव शीतल होता हैं। यह जल प्रधान ग्रह हैं। तीव्र कल्पना-शक्ति एवं व्याकुल स्वभाव चंद्र प्रधान जातक की विशेषता होती हें। इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कोई अंगुली नहीं करती। अतः इस स्थान का उभार इसकी विशेषता बताता हैं।

यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि हाथ के जिस भाग से उसकी पहचान होती है, उस भाग को चन्द्र पर्वत कहा जाता हैं। अलग-अलग या संयुक्त चिन्ह, नक्षत्र,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिकोण, वृत्त, एकमात्र उठती हुई रेखा, वर्ग या त्रिशुल चन्द्र पर्वत की शक्ति को बढ़ाते हैं।

स. मंगल क्षेत्र

मंगल का क्षैत्र एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें दो क्षैत्र मिलते हैं। जबकि अन्य सब ग्रहों की स्थिति केवल एक ही क्षैत्र में होती हैं। मंगल के दो पर्वत होते हैं। गुरू और शुक्र के बीच के क्षेत्र का भाग निम्न मंगल, बुध एवं चंद्र क्षेत्र के मध्य का भाग उर्ध्व मंगल तथा बीच का समतल भाग मंगल का मैदान कहलाता हैं, जिसका सम्बन्ध मंगल प्रधान जातक के साथ होता हैं। निम्न मंगल से कार्यशीलता, साहस एवं आक्रमण शक्ति प्रकट होती हैं। जबकि उर्ध्व मंगल से आक्रमण और बचाव भावना की जानकारी प्राप्त होती हैं। मंगल के मैदान जातक की शारीरिक शक्ति को दर्शाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

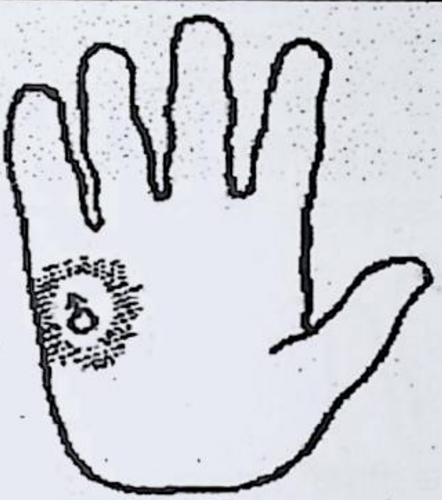

Upper Mars

Lower Mars

द. बुध पर्वत

चौथी अंगुली कनिष्ठिका के आधार के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। इस स्थान को विजय स्थान भी कहा गया है। इसका प्रभाव कम उष्ण होता है। बुध प्रधान जातक में विचारने व कार्य करने की क्षमता का द्योतक होता हैं।

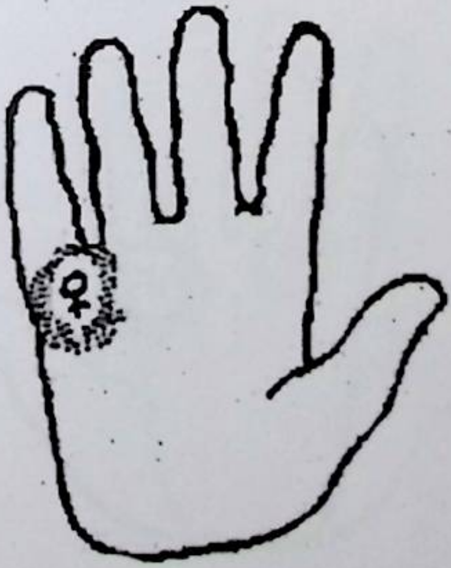

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसे जातकों के गुण एवं उसकी विशेषतांए सदैव स्पष्ट होती हैं। और वह एक महान वक्ता, वैज्ञानिक, चिकित्सक या वकील बनता हैं और व्यापार–व्यवसाय में भी उसे बड़ी सफलता मिलती हैं।

य. गुरू पर्वत

गुरू पर्वत पहली अंगुली तर्जनी के आधार पर हैं। इस स्थान को पित स्थान भी कहते हैं। गुरू पर्वत के आसपास तीन मुख्य रेखाएं जैसे हृदय रेखा, जीवन रेखा, और मस्तिष्क रेखा उदित होती हैं। यदि यह क्षेत्र अच्छा उठा हुआ हो तो इस क्षेत्र के गुण बहुत अधिक मात्रा में मिलेगे। इसके विपरित यदि यह क्षेत्र दबा हुआ हो तो इस क्षेत्र के सभी गुणों में कमी आएगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र. शुक्र पर्वत

अंगूठे के आधार पर शुक्र पर्वत का स्थान है। शुक्र पर्वत का विकास वासना, सुख, सुविधा व ऐश्वर्य को बढ़ाता हैं।

ल. शनि पर्वत

शनि पर्वत का स्थान दूसरी अंगुली मध्यमा के आधार पर हैं। इसे मातृ स्थान भी कहते हैं। इसका प्रभाव शीतल रहता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ के शनि पर्वत और शनि अंगुली द्वारा उसकी पहचान होती है। शनि पर्वत जितना अधिक ऊँचा और विकसित होता हैं, उसकी अंगुली भी उतनी ही अधिक बड़ी एवं लम्बी होती हैं। इस अंगुली का अग्रभाग जितना अधिक वर्गाकार होता है। शनि की उतनी ही प्रबलता जातक में विद्यमान रहती हैं। शनि पर्वत का अत्यधिक विकसित रूप विरले हाथों में ही होता हैं।

7. अंगूठा

हथेली के बाद सबसे कोने में व अंगुलियों की आपस की दूरी से कही ज्यादा दूरी पर स्थित भाग को अंगूठा कहते हैं। अंगूठा सामान्यतः सभी अंगुलियों से लंबाई में छोटा होता हैं। किन्तु यह मोटाई में अंगुलियां से अधिक मोटा होता है। अंगूठे को हथेली का राजा भी कहा जाता है क्योंकि इसकी सहायता के बिना कुछ भी उठाया नही जा सकता। अंगूठे के बिना किसी भी कार्य जैसे लिखना, किसी वस्तु को ठीक से पकड़ना, दक्षकारी, कला, इत्यादि नहीं किया जा सकता हैं।

अंगूठे के अध्ययन के समय निम्न का भी अध्ययन किया जाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. नाखून

हस्त रेखा के विषय में सामान्यतः अंगूठे के नाखून का अध्ययन भी किया जाता हैं। नाखून अंगूठे के कर पृष्ठ पर होता हैं जिससे स्वस्थता व रोग के प्रभाव की जानकारी प्राप्त होती है।

ब. पर्व

अंगूठा तीन पर्वो में बंटा हुआ हैं। हस्त रेखा विज्ञान में इन पर्वो को तीन विश्व कहा गया हैं। तीनों पर्व तीन सबसे महत्वपूर्ण गुणों के प्रतिनिधि हैं जिनके कारण जातक को सफलता प्राप्त होती है। पहला पर्व इच्छा शक्ति का पर्व हैं। इससे जातक के दृढ़निश्चय का पता चलता हैं। दूसरा पर्व शक्ति का द्योतक है और तीसरा पर्व प्रेम और सांसारिक इच्छाओं का प्रतीक हैं। तीनों पर्वो के सम्मिलित प्रभाव से जातक को नैतिक बल मिलता हैं।

8. अंगुलियां

हथेली के बाद हाथ के प्रमुख भागों में से एक भाग है अंगुलियां। अंगुलियां अंगूठे को छोड़कर कुल चार होती हैं। अंगुलियों के विभिन्न नामकरण किय गये है जो निम्न हैं।

1. प्रथम अंगुली– तर्जनी

हथेली के अग्र भाग में अंगूठे के पास प्रथम अंगुली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पितृ स्थान की होती हैं। यह हथेली की तीन मुख्य रेखाओं का उद्गम स्थल है। नेतृत्व, सम्मान भाव, महत्वाकांक्षा जैसे मुख्य गुणों को दर्शाती हैं। इसका प्रभाव उष्ण है।

2. दूसरी अंगुली – मध्यमा

तर्जनी के पास, अंगूठे से द्वितीय, मातृ स्थान, स्थिरता, सौम्यता तथा बुद्धिमता जैसे मुख्य गुणों को यह दर्शाती हैं। इसका प्रभाव शीतल होता हैं। सामान्य तौर पर बाकी सभी अंगुलीयों से यह लंबाई में बड़ी होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. तीसरी अंगुली – अनामिका

मध्यमा के पास अंगूठे की दिशा से तीसरे क्रम पर विद्या को बताती हैं। आशा, उत्साह, पराक्रम, कर्मठता, ख्याति प्राप्त करने की इच्छा दर्शाने वाली अंगुली अनामिका कहलाती हैं। इसका प्रभाव उष्ण हैं।

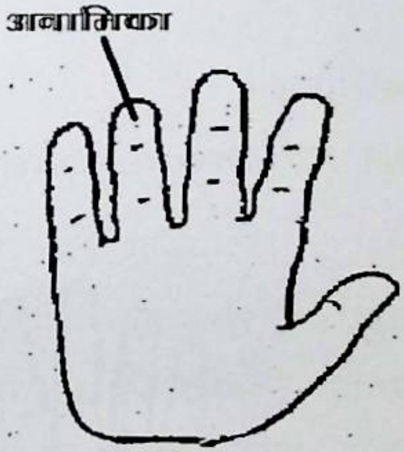

4. चौथी अंगुली – कनिष्ठिका

अंगूठे के विपरित छोर पर अंतिम अंगुली कनिष्ठिका कहलाती हैं। यह व्यवहारिक बुद्धि, परिवर्तनशील इच्छाएं एवं सुक्ष्मदृष्टिकोण को दर्शाने वाली होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलीयों के कई उपभाग भी है जो निम्न हैं :–

अ. अंगूलीयों के पर्व

प्रत्येक अंगुली में तीन पर्व होते हैं।

प्रथम पर्व :–

प्रथम पर्व भाव व आवेश की मात्रा को बताता हैं।

द्वितीय पर्व :–

द्वितीय पर्व व्यवहारिक बुद्धि की पहचान बताता हैं।

तृतीय पर्व :–

तृतीय पर्व शारीरिक सुख व खान–पान बताता हैं।

ब. अंगुलीयों के गांठे

सभी अंगुलियों के पर्वो के उद्‌गम पर उभरी हुई आकृतियाँ गाठें कहलाती हैं। पर्वो का जोड़ जिस स्थान पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिलता हैं वह उभरी आकृति गांठे कहलाती हैं। कुछ लोगों की अंगुलीया जन्म से ही गांठदार हो सकती हैं। प्रायः दो गांठे पाई जाती हैं। प्रथम गांठ व दूसरी गांठ। प्रथम गांठ पहले व दूसरे पर्व के मध्य पायी जाती हैं एवं दूसरी गांठ दूसरी गांठ दूसरे व तीसरे पर्व के मध्य पायी जाती है।

स. अंगुलियों के नाखून

नाखून कर पृष्ठ पर अंगुलियों व अंगुठे के अग्र भाग पर पाई जाने वाली कड़क त्वचा को कहते हैं। अंगुलियों के ऊपरी सिरे अत्यंत संवेदनशील होते हैं। अतः इस रक्षा कवच के रूप में नाखून के रूप में विद्यमान रहते हैं। इसके द्वारा जातक के स्वास्थ्य, जीवन शक्ति और स्वभाव की जानकारी मिलती हैं। जातक के शरीर में रक्त की मात्रा व हार्मोन, खनिज की उपस्थिति, इत्यादि नाखून की बनावट व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकार–प्रकार द्वारा पता किया जा सकता हैं।

नाखूनों की देखभाल कितनी ही सावधानी से व किसी भी प्रकार की जाये, उनके प्रारूप को कभी भी बदला नहीं जा सकता। भले ही काम करते हुए नाखून टूट जायें या फिर पूरी तरह सजा–संवार कर रखे गये हों, उनका प्रारूप अपरिवर्तित ही रहता है।

9. कर पृष्ठ

अंगुलियों व हथेली के विपरित भाग को पृष्ठ कहते हैं। इस भाग में बाल पाये जाते हैं। अंगुलियों व अंगुठे के सिरे पर कर पृष्ठ में नाखून स्थित होते हैं। कर पृष्ठ की त्वचा की बनावट व उस पर बालों की स्थिति से बहुत सी जानकारी प्राप्त हो सकती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. मणिबंध रेखाएं

हाथ जहां प्रारम्भ होता है वहां कलाई के भीतर की ओर करतल की ओर जो रेखाएं होती है उन रेखाओं को मणिबंध रेखाएं कहते हैं। हस्त रेखा शास्त्र के अनुसार प्रथम मणिबंध रेखा धन की, दूसरी शास्त्र की ओर तीसरी शक्ति की होती हैं। उनमें जो रेखा स्वच्छ, सरल व बलवान हो तो उसका उत्तम फल प्राप्त होता हैं।

तीनों रेखाएं श्रृंखलाकार हो तो मनुष्य अत्यंत परिश्रम कर व कठिनाईयों का सामना कर धन अर्जित करता हैं। यदि तीन से अधिक रेखाएं हो तो दरिद्रता व दुर्भाग्य की सूचक होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. चेहरा

मनुष्य का चेहरा व मुखाकृति द्वारा भी जातक के स्वभाव का अध्ययन किया जाता हैं। चेहरे की आकृति को भी कई भागों में बांटा गया हैं।

अ. गोल चेहरा
ब. चौकोर चेहरा
स. लंबा चेहरा
द. त्रिकोण चेहरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. मस्तक

मस्तक चेहरे के उपरी भाग को कहते हैं। मस्तक को ललाट भी कहते है। आंखो की भोहों के उपर व सिर के बालों के मध्य इसकी स्थिति होती हैं।

13. आंखे

आंखे मुख्य रूप से चेहरे का आकर्षण का केन्द्र बिन्दु हैं। इसके द्वारा जातक के मन के भावों को पढ़ा जा सकता हैं। आंखों को मन की खिड़कियां भी कहा गया हैं।

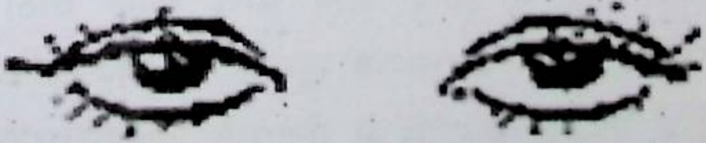

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आंखो के अध्ययन में चार मुख्य भाग होते हैं।

1. आंखो का रंग
2. आंखो का आकार

14. भौंहे

आंखों के उपरी सिरे पर पाये जाने वाले बालों के समूह को भौंहें कहा जाता हैं। भौंहों से कोई भी जातक अपने विचार को बताने में सक्षम रहता हैं। नर्तक व अभिनेता की भौंहे उनके कार्य को सुचारू बनाती हैं व विभिन्न भावों को वह कुशलता से व्यतीत कर पाते हैं। अलग-अलग चेहरे पर अलग-अलग आकार की भौंहे बनती हैं, जिसके विभिन्न प्रभाव होते हैं।

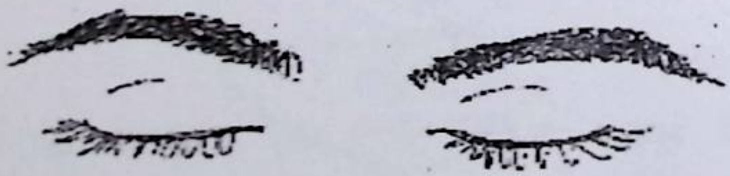

15. कान

चेहरे के दायें व बायें ओर पाये जाने वाले गोलनुमा आकार कान कहलाते हैं। कान सुनने की क्षमता प्रदान करते हैं। कान कई प्रकार के होते हैं जिसके आधार पर जातक के बारे में फल कथन किया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. छोटे कान
2. चौड़े कान
3. चपटे कान
4. गोल कान
5. नुकिले कान
6. बाल युक्त कान

16. नाक

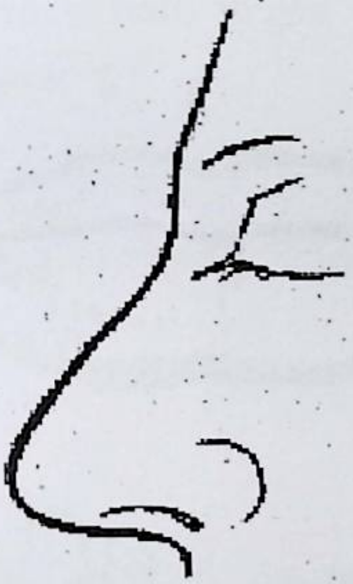

नाक चेहरे का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। नाक मनुष्य को सूघंने की शक्ति प्रदान करते हैं। इसके द्वारा व्यक्ति की आर्थिक स्थिति व मनुष्य की काम भाव की मात्रा तुरन्त मालुम पड़ती हैं। इन्हें कई प्रकार में विभाजित किया गया हैं।

1. छोटी नाक
2. बडी नाक
3. साधारण नाक
4. दबी नाक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

17. होंठ

होंठ चेहरे का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जो चेहरे के भावों को दर्शाता हैं। यह कई तरह के होते हैं। इनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं।

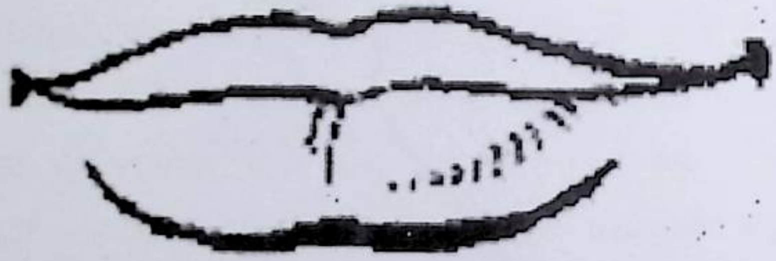

1. साधारण होंठ
2. धनात्मक होंठ
3. व्यवहारिक होंठ
4. पतले होंठ
5. हसमुख होंठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ के विभाग

हस्त रेखाओं के अध्ययन के इस चरण में हाथ को सम्पूर्ण रूप में देखना चाहिये। हाथ के स्वरूप व संतुलन में जातक के दोनों हाथ पूरी तरह खोल कर देखना चाहिये। हस्त रेखा शास्त्र के पश्चिमी विद्वान बेन्हम ने पूरे हाथ को तीन विभागों में बांटा हैं।

1. उपरी भाग
2. मध्य भाग
3. निम्न भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. उपरी भाग

उपर का अंगुलिया वाला भाग इसमें अंगुलियों की लंबाई आती हैं यह भाग जातक के मानसिक भाग को प्रकट करता हैं। इस भाग से आध्यात्मिक लोक का पता चलता हैं। अगर अंगुलिया सामान्य से लंबी हो तो जातक का मन प्रबल होता हैं। जिन जातकों के हाथ का प्रथम भाग अधिक विकसित होता हैं वे विचारों की दुनिया में रहने वाले और अव्यवहारिक होते हैं। इसमें प्रायः साहित्यकार एवं अध्यापक जैसे व्यक्ति आते हैं। ये लोग सांसारिक दृष्टि से अधिक धनी नहीं हो पाते।

2. मध्यम भाग

अंगुलियों की जड़ से शुक्र पर्वत तक का मध्य भाग इस विभाग में अंगुलीयों के आधार से मस्तिष्क रेखा तक का भाग आता हैं। यह भाग जातक के व्यवहारिक पक्ष को प्रकट करता हैं। जिन जातकों का मध्य भाग विकसित होता हैं वे व्यावहारिक, बुद्धिमान और चतुर होते हैं। यदि उपरी व निम्न भागों की तुलना में मध्य भाग अधिक विकसित हो तो जातक भौतिक सफलता को अधिक महत्व देता हैं एवं जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त करने के प्रति प्रयत्नशील रहता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. निम्न भाग

शुक्र पर्वत से कलाई तक का भाग निम्न भाग कहलाता हैं। यह मस्तिष्क रेखा से कलाई तक होता हैं। इस भाग के अध्ययन से जातक की मूल प्रवृतियों तथा शारीरिक आवश्यकता के विषय में बताता हैं। यदि यह विभाग बड़ा हो तो जातक देह सुख को प्राथमिकता देता हैं। खाना-पिना व मौज मनाना ही उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य होता हैं। जातक छोटी-छोटी इच्छाओं की पूर्ति हो जाने पर ही आनंद महसूस करता हैं।

मतांतर से कई पश्चिमी हस्त रेखा विशेषज्ञों ने अनुसंधान व अध्ययन कर कुछ नई मान्यताओं को जन्म दिया। उनके अनुसार अंगुलीयों को हाथ के विभाग में शामिल नही करते हुए केवल हथेली के ही तीन विभाग किये गये जो निम्न हैं।

1. भावना क्षैत्र
2. व्यवहारिक क्षैत्र
3. दैहिक क्षैत्र

1. भावना क्षैत्र

हृदय रेखा से अंगुलीयो के आधार तक के भाग को भावना क्षैत्र में लिया गया हैं। हृदय रेखा आम तौर पर सीधी नही होती इसलिये इस क्षैत्र की सीमा निश्चित करने के लिये हृदय रेखा के मध्य भाग से बुध पर्वत की ओर से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू पर्वत तक एक काल्पनिक रेखा लगा कर पूरे क्षैत्र की सीमा निश्चित की जाती हैं। इस क्षैत्र से जातक में भावना का अध्ययन किया जाता है।

2. व्यवहारिक क्षैत्र

भावना क्षैत्र की निचली सीमा से यह क्षैत्र शुरू होता हैं। इस क्षैत्र के विभाग की निचली सीमा निर्धारित करने के लिये अंगूठे का हथेली के अलग होने वाले उपरी भाग से लेकर मस्तिष्क रेखा के मध्य भाग तक एक कल्पित रेखा लगाई जाती हैं। यह क्षैत्र जातक के व्यवहार कुशलता को दर्शाता हैं।

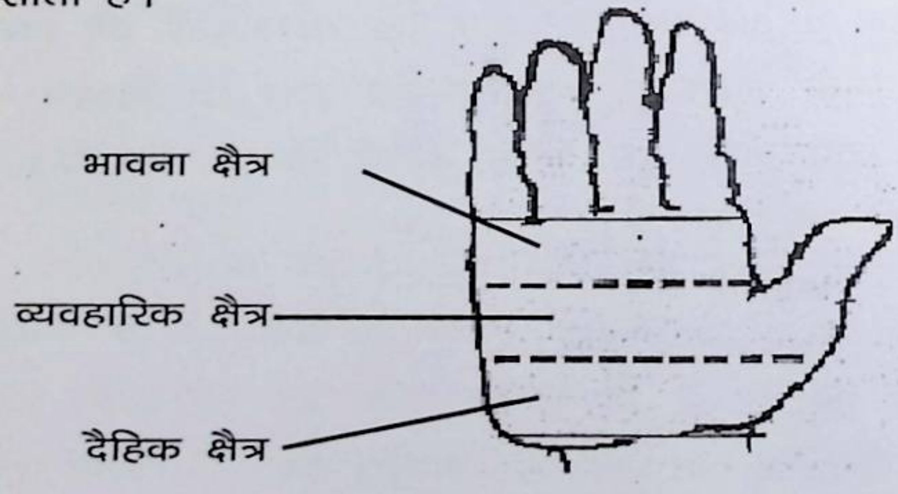

3. दैहिक क्षैत्र

जहां व्यवहारिक क्षैत्र की निचली सीमा समाप्त होती हैं वहीं दैहिक क्षैत्र की उपरी सीमा शुरू होती हैं। इस सीमा में कलाई की पहली मणिबंध रेखा तक का भाग आता हैं। यह भाग जातक की मूल दैहिक प्रवृत्तियों से संबंधित होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन

पश्चिमी हस्त रेखा शास्त्रियों ने लंबवत रेखा के आधार पर मस्तिष्क का विभाजन भी किया है जो निम्न है। यह भाग चौड़ाई पर केन्द्रित न होते हुए लंबाई पर केन्द्रित हैं।

मन भी दो प्रकार का होता हैं।

1. चेतन मन
2. अवचेतन मन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. चेतन मन

हाथ के मध्य लंबवत रेखा अनामिका और मध्यमा के मध्य एक खड़ी लकीर यदि कलाई के मणिबंध तक लगाई जाए तो जिस भाग में अंगूठा आयेगा वह भाग का प्रभाव चेतन मन से संबंधित हैं। चेतन मन के इस भाग में गुरू पर्वत, शनि पर्वत, आक्रमक मंगल और शुक्र पर्वत आते हैं।

2. अवचेतन मन

हाथ के मध्य लंबवत रेखा अनामिका और मध्यमा के मध्य से यदि कलाई के मणिबंध तक लगाई जाये तो इसका दूसरी ओर का भाग जिसमें बुध पर्वत, सूर्य पर्वत, रक्षात्मक मंगल और चंद्र पर्वत आयेंगे वह अवचेतन मन का प्रतिनिधित्व करता हैं।

यदि हथेली का चेतन मन का विभाग उभरा हो तो जातक में अंर्तदृष्टि की शक्ति नहीं होती उसे वहीं दिखाई देता है जो स्थूल आंखों से नजर आता हैं। ठीक इसके विपरित हथेली का अवचेतन मन का विभाग अधिक उभरा हुआ हो तो जातक की छठी इन्द्रि जाग्रत रहती है। जातक को अनदेखी घटनाओं का अनुमान पहले से हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्व अभ्यास – 2

सही विकल्पों को चुनिये :–

1. बाया हाथ निम्न में से कौन से गुण का द्योतक हैं?

   अ. प्रारब्ध ब. कर्म

   स. विवाह द. उपरोक्त सभी

2. मणिबंध पर कितनी रेखाएं पांयी जा सकती हैं ?

   अ. एक ब. दो

   स. तीन द. चार

3. सूर्य पर्वत किस अंगुली के आधार पर स्थित हैं?

   अ. तर्जनी ब. अनामिका

   स. कनिष्ठका द. मध्यमा

4. निम्न में से कौन सा पर्वत किसी भी अंगुली द्वारा नहीं दर्शाया जाता हैं?

   अ. सूर्य पर्वत ब. गुरू पर्वत

   स. चंद्र पर्वत द. शनि पर्वत

5. उर्ध्व मंगल का स्थान हाथ में कहा स्थित हैं?

   अ. गुरू पर्वत व शुक्र पर्वत के मध्य

   ब. बुध पर्वत व चंद्र पर्वत के मध्य

   स. बुध पर्वत व शनि पर्वत के मध्य

   द. शनि पर्वत व शुक्र पर्वत के मध्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. अंगूठे के आधार पर कौन सा पर्वत स्थित है ?

अ. बुध पर्वत ब. गुरु पर्वत

स. शुक्र पर्वत द. शनि पर्वत

7. जातक में रोग व स्वस्थता का विचार निम्न में से किसके अध्ययन से किया जा सकता हैं ?

अ. अंगूठा ब. नाखून

स. अंगुलियां द. मणिबंध

8. अंगूठे के प्रथम पर्व से जातक में किस गुण का पता चलता हैं ?

अ. इच्छा शक्ति ब. बल

स. भौतिक इच्छाए द. उपरोक्त सभी

9. अंगुलियों के दूसरे पर्व जातक में किस गुण के द्योतक हैं ?

अ. आक्रमण शक्ति ब. व्यवहारिकता

स. शारीरिक उर्जा द. उपरोक्त सभी

10. चेहरे का कौन सा भाग नर्तकों व अभिनेताओं के भावों में वृद्धि करता हैं ?

अ. आंखे ब. भौहे

स. नाक द. कान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh